No-057527 20-43-13

પુસ્તક ૧ લું.] ભાદરવો : વીર સંવત ૨૪૬૭. [અંક ૧૧

શ્રીમદ્ પન્યાસરત્ન વિજયજી મહારાજ.

તંત્રી :
લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ શાહ.

પ્રકાશક
ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ.

## જાહેર ખબર આપનારાઓને

જૈન સમાજને ગામડે ગામડે આ નવા માસિકનો પ્રચાર થશે, અને એથી જાહેર ખબર આપનારાઓ પોતાના પ્રચારનો સંદેશ દૂર દૂર પહોંચાડી શકશે.

માસિક નિયમિત પ્રગટ થતુ હોવાથી જાહેર ખબર આપનારાઓને આ તકનો લાભ લેવા આમંત્રણ આપીએ છીએ, ભાવ નીચે મુજબ.

| પૃષ્ઠ | બારમાસ | નવમાસ | છમાસ | ત્રણમાસ | એકમાસ |
|---|---|---|---|---|---|
| ૧ | ૪૦ | ૩૨ | ૨૪ | ૧૪ | ૬ |
| ૦ાા | ૨૫ | ૨૦ | ૧૫ | ૯ | ૪ |
| ૦ા | ૧૫ | ૧૨ાા | ૧૦ | ૭ાા | ૨ાા |

એક વખત ટુંકી જાહેરાતના કોલમની બે લાઈન યા તેના ભાગનો રૂ. ૧)

અંક સાથે છપાવેલ તૈયાર હેન્ડબીલની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂ. ૧૫)

અંક સાથે છપાવેલા તૈયાર દરેક તોલા અઢી યા તે વજનના કોઇ પણ ભાગના સૂચિપત્રની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂ. ૩૦)

સરતો-(૧) નાણા અગાઉથી લેવામાં આવશે. (૨) જાહેર ખબર લેવી યા ન લેવી એ તંત્રીની મરજી ઉપર રહેશે. (૩) જાહેરાત પાછી મોકલાશે નહિ.

વધુ ખુલાસા માટે પત્રવ્યવહાર યા પુછપરછ નીચેના શરનામે કરો.

"જૈન ધર્મ વિકાસ" ઓફીસ ૫૬/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ.

---

## ફક્ત સાધુ સાધ્વીઓ માટેજ

મનીઓરડરથી વાર્ષિક લવાજમના રૂ. ૩-૦-૦ મોકલી થનારા ગ્રાહકોને, નીચેના ચાર પુસ્તકો ઉપરાંત લવારની પોળવાળા **પોપટ બ્હેન** તરફથી "તપાગચ્છ પટ્ટાવળી" ક્રાઉન આઠ પેજી. પાકું પુંઠું (જેકેટ સાથે) પૃષ્ઠ ૩૫૦નું ભેટ મોકલવામાં આવશે. વી.પી. થશે નહિ. **'તંત્રી'**

---

**ભેટ !** **જૈનતત્ત્વસારિકા** **ભેટ ! !**

આ ગ્રંથ શ્રી વર્ધમાન સત્ય નીતિ હર્ષસૂરિ ગ્રંથમાલા તરફથી પ્રકાશિત થએલ છે. સંસ્કૃતના અભ્યાસી સાધુ સાધ્વી તથા જૈન ભંડારોને ભેટ આપવાનો છે. મંગાવનારે નીચેના સરનામે પત્ર લખવો:—

૧ **શેઠ રતીલાલ વાડીલાલ**
ઠે. સેન્ડહર્સ્ટ રોડ, બનજી નિવાસ,
મુ. **મુંબાઈ.**

૨ **શેઠ કાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલ**
ઠે. મરીન ડ્રાઇવ, ઈશ્વર નિવાસ,
પ્લોટ નં. ૭૩, મુ. **મુંબાઈ.**

૩ **શેઠ વરધીલાલ કચરાભાઇ**
ઠે. ભાલની પોળ, મુ. **રાધનપુર.**

૪ **શેઠ કકલભાઈ નીહાલચંદ**
ઠે. ભણસાલી શેરી, મુ. **રાધનપુર.**

૫ **વીશાશ્રીમાલી તપગચ્છ જૈન સંઘ**
ઠે. મોહનવિજયજી **જૈન** પાઠશાલા, મુ. **જામનગર.**

---

**તા. ક.**—જામનગરથી પુસ્તક મંગાવનારે પ્રતદીઠ પોસ્ટ ખર્ચને માટે આઠ આનાની પોસ્ટની ટીકીટો મોકલવી.

ટાઇટલ છાપનાર : શારદા મુદ્રણાલય, પાનકોર નાકા, જુમામસીદ સામે—અમદાવાદ

# જૈનધર્મ વિકાસ.

પુસ્તક ૧ લું. ભાદ્રપદ, સં. ૧૯૯૭. અંક ૧૧ મો.

## પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહોત્સવ.

( રચયિતા—મુનિ હેમેન્દ્રસાગરજી. )

( સુણો ચંદાજી.............. એ રાગ )

ભવિ ભાવ ધરી પર્યુષણ પુણ્યકારી પ્રેમે ઉજવો,
ગુરૂ મુખ કેરો બોધ સુણીને હર્ષે ઉરને રીઝવો. ભવિ૦ ૧

શુભ કલ્પસૂત્ર શ્રવણે ધારો,
વિધિપૂર્વક સુણીને પાપ હરો,
ગુરૂ મુખથી સુણીને ભવથી તરો. ભવિ૦ ૨

નવ વ્યાખ્યાનો અતિ સુખકારી,
વીર, પાર્શ્વ નેમિ ને ઋષભાદિ,
શુભ સ્થવિરાવલિ ને સમાચારી. ભવિ૦ ૩

પર્યુષણનો શુભ અર્થ ગ્રહો,
કરી પુણ્ય અતિશય પાપ દહો,
આત્મામાં રમણતા શ્રેષ્ઠ ચહો. ભવિ૦ ૪

મળ્યું કલ્પસૂત્ર પાવનકારી,
એકવીસવાર શ્રવણે ધારી,
બનો મોક્ષ તણા પછી અધિકારી. ભવિ૦ ૫

કરો ક્ષમાપના સહુ જીવ પરે,
સમભાવ ધરી વર્તન જો કરે,
આરાધક પદને પ્રાણી વરે. ભવિ૦ ૬.

નવ વારંવાર આ યોગ મળે,
શુભ પુણ્ય તણો અવસર આ ફળે,
જેથી બુદ્ધિ સુમાર્ગે વિશેષ વળે. ભવિ૦ ૭

એ સમયે પ્રતિક્રમણો કરવાં,
અતિ આનંદથી પ્રભુગીત સ્મરવાં,
ગુરૂદેવ દર્શને શિર ધરવાં. ભવિ૦ ૮

આરંભ, પાપનો ત્યાગ કરો,
વ્યવહાર, ધર્મનું ધ્યાન ધરો,
બ્રહ્મચર્ય, શીલને ગ્રહણ કરો. ભવિ૦ ૯

તપશ્ચર્યા છઠ્ઠ અઠ્ઠમની,
તપ અષ્ટ દિનનું શુદ્ધ બની,
વળી વિવિધ પૂજા પ્રભુ જિનની. ભવિ૦૧૦

અસત્યવચનના ત્યાગી બનો,
જુગાર રૂપી એક શત્રુ હણો,
એવાં ગુરૂબોધ તણાં વચનો. ભવિ૦૧૧

ઉત્સવ નંદીશ્વર દેવ કરે,
માનવભૂમિ એ કેમ ના ઉજવે ?
પછી અનંત ઋદ્ધિની પ્રાપ્તિ ધરે. ભવિ૦૧૨
પર્યુષણને ઉર મધ્ય સ્મરે,
પ્રભુગાન વિષે ઉત્સાહ ધરે,
હેમેન્દ્ર અજિતપદ પ્રાપ્ત કરે. ભવિ૦૧૩

———૦———

# ॥ श्री आदीनाथ चरित्र पद्य ॥

( जैनाचार्य जयसिंहसूरीजी तरफथी मळेलुं )

(અંક ૧૦ પૃષ્ઠ ૨૮૨ થી અનુસંધાન)

बिजली सम योवन हो नासा, रोग आय पुनि डालत पासा ।
विषयवासनाफांसी भारी, अंध जीवको लगे सुखारी ॥
मोक्षमार्ग चिन्ता नहीं होइ, कायाकंचन अतिप्रिय होइ ।
नरतनु हे अतिदुर्लभ भाइ, अंध जीव तिन निरा बिताइ ॥
पूर्वकर्म जब अतिशुभ होवे, तब जिनधर्म मिले सुख होवे ।
नर भवका में लूंगा लावा, दर्शनज्ञानचरित्र सुहावा ॥
महाबल कुंवर राज्य देडारूं, उत्तमचरित्र हृदयमें धारूं ।
इमि कह महाबलको बुलवाये, राज्यनीतिके मार्ग बताये ॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवश्य नर्क अधिकारी ।
असजिय जान सुनहु अय बेटा, सदा करहु निजरिपु सन भेटा ॥
धर्म कर्म रखना अति नेमा, देवधर्म सन रखना प्रेमा ।
पितु आज्ञा निज शीस धर, लिया राज्यका भार ।
बड़े बचन नही टालिये, यह है नीतिपुकार ॥
पुनि सिंहासन कुंवर बिठाये, मंगल शकुन नगर महि छाये ।
तिलकप्रथा नृप निज कर कीनी, बहुप्रकार पुनि आसीस दीनी ॥
मस्तकतिलक सोहे अतिसुन्दर, चंद्र उदय उदयाचल भूधर ।
चंद्रोदय सागर शुभ गर्जन, तिमि मंगल गावत बंदीजन ॥
राज्य भार इमि सोंप कुमारा, नृप चारित्र लिया सुखकारा ।
जान असार विषयसुख छोड़ा, दर्शन ज्ञान चारित्र मन जोड़ा ॥
विषय कषाय नष्ट कर दीना, जिमि हिंसक नर दयाविहीना ।
आतमरूप मन वाणी अधिकारा, देह उपाय सहत सब भारा ॥
राजर्षी सतबल हो जावा, मुक्तिमें आनन्द मनावा ।
ध्यानतपहिं में उम्र बिताई, देहत्याग देवगति पाइ ॥
कुंवर महाबल राज्यको, सेवत अति सुख पाय ।
नारिन संग क्रीडा करे, इहि विधि उमर गमाय ॥

अपूर्ण

# ॥ श्री शीलकुलकम् ॥

कर्ता—जैनाचार्य श्रीपद्मसुरिजी.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૮૧ થી અનુસંધાન)

॥ आर्यावृत्तम् ॥

भुंजंते बहुभोए-सुहिओ होमि त्ति सुक्खतण्हाए ।
जाणिज्जा किंतु तुमं-भविस्ससि प्पगय परिवरिओ ॥११॥
नेउण्णेणं तेणं-किं जं जायइ गयस्स समयम्मि ।
पावविहाणावसरे-अचेयणं खेयचिंधं तं ॥१२॥
हाहा हं चयसमये-ण चेइओ तेण तिव्वदुक्खमिणं ।
बंधक्खणे चउरणरा-अप्पं वि दुहं ण पावंते ॥१३॥
कहकिट्ठवाहिविहुरो-नियं किलेसेइ भक्खणा दहिणो ।
एवं बंधविमूढा-नियं किलेसेइ कम्मुदए ॥१४॥
साहीणो बंधखणो-उदयखणो णो तहत्ति जाणित्ता ।
उदयखणो बलवंतो-सुही तयाईइ चेअंता ॥१५॥
दासा जे आसाए-विण्णेया सव्वलोयदासा ते ।
आसा जेसिं दासी-दासो लोओ सया तेसिं ॥१६॥
इह दिट्ठंतो णेओ-णिवजोगीणं निवोवि तं सोचा ।
वेरग्गं पप्प मुया-बहुसो पणमेइ जोगिपयं ॥१७॥

॥ मंदाक्रान्ता ॥

किं तं नाणं हवइ कइया जम्मि राओ बलिट्ठो ।
नाणं भाणू हरइ तिमिरं तं ण भाणुप्पयासे ॥
चाओ नाणस्स फलममलं तेण होज्जा विराआ ।
भव्वा ? हारंति ह ण विउहा तुच्छमोहेण भद्दं ॥१८॥
जे णो लिप्पंति वियडदुहेणं पमोहेण कइया ।
ते विण्णाणी पसमनिरया भाविकल्लाणजुग्गा ॥
सुत्ती वाणी विहडइ सया मोहतेणस्स जालं ।
तं मोएणं जिणअ गइयं तं वियारिज्ज णिच्चं ॥१९॥

[अपूर्ण]

# शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा

( लेखक )—पूज्य मु. श्री. प्रमोदविजयजी म. ( पन्नालालजी )

( અંક. ૧૦ પૃષ્ઠ ૨૮૪થી અનુસંધાન )

दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीविअं समयं गोयम ! मा पमायए॥

अर्थात् समय मात्र भी धर्म क्रिया में प्रमाद का सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि चंचल जीवन का क्षण मात्र के लिये भी विश्वास नहीं है। काल चक्र हमेशा सिर पर मंडराता रहता है:—

जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चूणरं णेइहु अंतकाले।
न तस्स माया व पिया व माया, कालम्मि तम्मिसहरा भवंति॥
एगो सयं पच्चणु होइ दुक्खं, कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं॥

अर्थात् यमराज का प्रहार होने पर मातापितादि सब आंखों से देखते ही रह जाते हैं, किंतु किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं कि उसे पुनर्जीवनदान दे सकें। बिचारा वह अकेला जीवही परभव में अपने कृत कर्मों का फलानुभव करता है। इसलिये संसार को असार समझकर हमेशां धर्मकृत्य करते रहने चाहिये जिससे कभी किसी बात का उपद्रव ही उत्पन्न न हो।

ज्यों ज्यों जीव धर्म के सन्निकट पहुंचता जाता है त्यों त्यों पौद्गलिक साधन प्रवृत्ति से विरक्त होकर आध्यात्मिक सुख के अगाधोदधि में प्रविष्ट हो कर वास्तविक सुखामृत पान का यथार्थानुभव करने लग जाता है। आध्यात्मिक सुख की उत्कृष्टावस्था का अनुभव ही मोक्ष है। और धर्म उसका मुख्य साधन है। धर्मस्थान में मानवता अभिन्न भावसे रहती है वहां व्यक्ति विशेष की प्रधानता का स्थान नहीं है कहा भी है कि:—

भगवान और भक्ति के बीच, नहीं जाति पांति का नाता है।
गुड़ लगता है सबको मीठा जो कोइ उसको खाता है।

यों तो धर्माचार्यों व शास्त्रकारों ने अपेक्षा विशेषकी प्रधानता देकर धर्म के नाना अंगसूचक विभिन्न भेद किये हैं किंतु वे प्रकार धर्म की भिन्नता के परिचायक न होकर उसके पृथक २ अंगोपांगपर ही प्रकाश डालनेवाले समझने चाहिये। इन अंगोपांगों से धर्म की शाखा प्रतिशाखा का स्फुट ज्ञान हो जाता है। धर्म तो वास्तव में एक अखंड पदार्थ है, और उस अखंड तत्व तक पहुंचने एवं अपना परिचय संबन्ध स्थापित करने के मार्ग भिन्न २ हैं। जिस प्रकार एक ही ग्राम में प्रवेश करने के मार्ग अलग रहने पर भी उन सब मार्गों का संबंध उस गांव से ही रहता है उसी प्रकार धर्म के तत्व (रहस्य) को समझने

के तरीके भी पृथक् २ ही हैं। जैसे भिन्न २ मार्गों के होने पर भी भिन्न २ ग्राम नहीं हो सकते उसी प्रकार अलग २ तरीकों से भी धर्म अलग २ नहीं माना जा सकता है।

भिन्न २ शाखा प्रशाखाओं के दृष्टिगोचर होने पर भी अलग २ वृक्ष का भास नहीं होता है, और कमल पंखडियां के अलग २ नजर आने पर भी जुदे २ कमल का बोध नहीं होसकता है ऐसे ही धर्म के रहस्य को, उसकी असलीजात को, एवं तत्व को समझने के लिये दया, दान, परोपकार, सत्य, क्षमा, शील आदि भेद किये जाने पर भी वह तो पारेकी तरह एक अखंडरूप में ही रहता है। धर्म के गंभीर तत्वों को सुगम, सरल और सुबोध बनाने के उद्देश्य से अथवा उसके विस्तृत स्वरूप का ज्ञान संपादन करने के अभिप्राय से ही प्रकार (भेद) किये जाते हैं। यदि धर्म एक अखंड पदार्थ न होता तो श्रमण भगवान् महावीर का गौतमस्वामी "धम्मसद्धाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ" इस प्रकार का प्रश्न ही क्यां करते ? उक्त प्रश्न से ही धर्म की एकरूपता सिद्ध हो रही है। यह प्रश्न धर्म के भिन्न २ अंगोपांगों को नहीं बतलाता है किंतु शुद्ध धर्म की अखंडता को सूचित करता है। स्वयं भगवान् भी जब गौतमस्वामी के प्रश्न का उत्तर देते हैं तो वे भी धर्म की एकरूपता को बताकर ही देते हैं, देखियेः—

"धम्म सद्धाए णं साया सोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ, आगारधम्मं च णं चयइ, अणगार धम्मं च पडिवज्जइ, अणगारिए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वुच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च णं सुहं निव्वत्तेइ"

अर्थात् हे गौतम ! धर्म पर श्रद्धा रखने से सातावेदनीयजनित पौद्गलिक सुखों का अनुभव करता हुआ उनसे विरक्त होता है, विरक्त होकर ग्रहस्थ जीवन का परित्याग कर देता है और अनगार (श्रमण) धर्म को स्वीकार करता है अनगारावस्था को प्राप्त कर जीव शारीरिक एवं मानसिक दुःखों को तहस नहस (छेदन भेदन) करडालता है। और अनिष्ट संयोगों का विच्छेद कर देता है। संयोगविच्छेद कर अव्याबाध मोक्ष सुख को प्राप्त करता है। धर्म का फल यावत् मोक्ष है।

उक्त प्रश्न के उत्तर में भगवान् ने भी धर्म के प्रकार न करके मोगम स्थूल रूप से ही धर्म का फल बतलाया है। धर्म शब्द के अन्तर्गत अहिंसा, सत्यादि सकल अंगोपांगो का समावेश हो जाता है। यदि धर्म कोइ विभिन्न पदार्थ होता तो भगवान् महावीर भी ऐसा ही कहते कि अहिंसा धर्म का फल यह है, सत्य का फल यह है इत्यादि।

धर्म का क्षेत्र संकुचित नहीं किंतु बहुत ही विशाल है। धर्म शब्द में आत्मा से संबंधित सकल गुणों का समावेश हो जाता है। इसी शब्द से धर्म की व्यापकता का पता लग जाता है। क्षुद्र या संकुचित विचारों के वशीभूत बनकर अथवा स्वार्थ पोषण एवं द्रव्य शोषण से प्रेरित होकर धर्म को भी बाडेबन्दी में ही परिमित रखना उपयुक्त एवं लोक कल्याणकारी नहीं है।

[अपूर्ण]

# શ્રી સિદ્ધચક્રની તાત્ત્વિકભાવના

લેખક. વિજયપદ્મસૂરિ

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૮૭ થી અનુસંધાન)

એ રીતે પ્રસ્તુત નવપદની સ્થાપના સહેતુક છે. તે સંબંધી વિચાર કર્યા પછી હવે નવે પદો સંબંધી વિચાર જણાવવો ઉચિત છે. આ નવે પદોના સમુદાયનું નામ 'સિદ્ધચક્ર' છે. સિદ્ધચક્ર એ શબ્દનો એવો અર્થ થાય છે કે 'સિદ્ધ' સિદ્ધિને આપનાર એવો 'ચક્ર' સમુદાય તેનું નામ 'સિદ્ધચક્ર' કહેવાય. તાત્પર્ય એ છે કે આ નવપદોનો સમુદાય વાંછિત ફલ જે મુક્તિ તથા સ્વર્ગાદિ તેને આપનાર હોવાથી સિદ્ધચક્રના નામથી ઓળખાય છે. બીજો અર્થ એ પણ થાય છે કે મુક્તિને મેળવવામાં અનંતા ભવ્યજીવોએ અનુભવેલું-સાધેલું ચક્ર તે સિદ્ધચક્ર કહેવાય નવપદમય શ્રીસિદ્ધચક્રના સંબંધમાં એક જિજ્ઞાસુ માનવ એ પૂછે છે કે—

પ્રશ્ન—નવેપદોની આરાધના કરવાની શી જરૂર છે? કારણ તીર્થંકર પદના કારણભૂત વીશ સ્થાનકો કે જેઓમાં નવે પદોનો પણ સમાવેશ છે. તે સ્થાનકોમાં પ્રત્યેકની આરાધનાના ફલ બતાવવાના પ્રસંગે હરિવિક્રમે દર્શન પદની આરાધનાથી તીર્થંકર પદ બાંધ્યું એમ કહેલ છે જ્યારે તીર્થંકર નામનો બંધ થાય છે તો મુક્તિ તો થવાનીજ તો પછી નવેપદોની આરાધના શા માટે કરવી જોઇયે? કદાચ કોઈ એમ કહેશે કે મુક્તિપદની પ્રાપ્તિ અંતર્ગત બીજાપદોની આરાધના કર્યા વિના એકલા એક પદની આરાધનાથી ન થઇ શકે તો ત્યાં મારે (પ્રશ્નકારે) કહેવું જોઇયે કે જો એકપદમાં મુક્તિ આપવાની શકિત નથી તો નવેપદો કેવી રીતે મુક્તિપદ આપશે? આ સંબંધમાં ન્યાય એમ કહે છે કે કોઇપણ પ્રકારના ફલને દેવાની શકિત જો અવયવમાં હોય તોજ અવયવિમાં તે શકિત સંભવે છે. જેમ બદામના એક ખંડમાંથી તેલ નીકળે છે એટલે એક ટુકડામાં પણ જો તેલ આપવાની શકિત છે, તો આખા દાણામાં પણ તેલ આપવાની શકિત છે. અને અવયવમાં જો તેવી શકિત ન હોય તો અવયવિમાં તે કયાંથી હોય? જેમ રેતીના સમૂહમાંના એક કણિયામાં તેલ આપવાની શકિત નથી તો તેનો ઢગલો પણ તેલ કેવી રીતે આપી શકશે? આ ન્યાયને પ્રસ્તુત પ્રસંગમાં ઉતારી કહીયે તો એમ કહી શકાય કે. જ્યારે એક પદની આરાધનાથી મુકિત ન હોય, તો સર્વે નવેપદોની આરાધનાથી કેવી રીતે મુકિતપદ મલી શકશે?

ઉત્તર—હરિવિક્રમ રાજાએ દર્શનપદની આરાધનાથી તીર્થંકર પદ બાંધ્યું એ વાત સાચી પણ એના ચરિત્રનો વિચાર જો યાદ હોત તો ઉપરના પ્રશ્નને

અવકાશ જ ન હતો. કારણકે તેમના ચરિત્રમાં એમ કહ્યું છે. "હરિવિક્રમ રાજા ચંદ્ર મુનિરાજની દેશના સાંભળી વૈરાગ્ય પામી રાજ્ય તજી સંયમ આરાધે છે. તેમાં બાર અંગો ભણ્યા પછી ગુરૂમુખે વિશસ્થાનકોનો મહિમા સાંભલી દર્શન પદની આરાધના કરે છે. દેવતા તે આરાધનામાંથી ચલાયમાન કરવા માટે ઘણા પ્રયત્નો કરે છે છતાં પણ ચલાયમાન થતાં નથી આવી નિશ્ચલ આરાધનાના પરિણામે તીર્થંકર નામકર્મ બાંધ્યું. અનુક્રમે ત્યાંથી કાળધર્મ પામી વિજય વિમાનમાં દેવ થયા. ત્યાંથી ચ્યવી પૂર્વવિદેહમાં તીર્થંકર થશે" આ ઉપરથી એમ સ્પષ્ટ સમજાય છે કે. દર્શનપદની આરાધનામાં જ્ઞાન ચારિત્રની આરાધના સમાઈ જ છે. જ્યારે ત્રણેની એકઠી આરાધના થઈ ત્યારે તીર્થંકરનામનો બંધ થયો છે જેમ તીર્થંકરનામના બંધમાં પણ અનેક પદાર્થની આરાધનાની જરૂર છે, તેમ મુક્તિપદની પ્રાપ્તિમાં પણ સમજી લેવું. મુખ્યતાએ જણાવેલા એકપદની સાધનામાં પણ બીજા પદોની સાધના ગૌણતાએ થાય જ છે. આ ખરી બીના છે. બીજું-તીર્થંકરનામના સંબંધમાં એ પણ સમજવાનું કે જ્યાં એ પદની આરાધના હોય, ત્યાં જ્ઞાન ચારિત્રની આરાધના જરૂર હોય, તે શિવાય તીર્થંકર નામકર્મનો બંધ ન સંભવે. છતાં હરિવિક્રમના સંબંધમાં "દર્શન પદની આરાધનાથી તીર્થંકરનામકર્મ બાંધ્યું" આ જે વચન કહેલ છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે-શ્રી અરિહંતપદ વિગેરે વીસસ્થાનકોમાં દર્શનપદ આવે છે. અને તે પદની આરાધનાના પ્રસ્તાવને પ્રસંગે તેનાથી જેને લાભ થયો હોય તે બતાવતાં તે પદની આરાધનાને મુખ્ય કરીને જ આરાધકનો નિર્દેશ કરાય, એવી મહાપુરૂષોની કથન (કહેવાની) શૈલી છે. માટે આ રીતે તે પદની આરાધનાને મુખ્ય કરીને તીર્થંકરનામનો બંધ કહેલ છે. બાકી હરિવિક્રમે જ્ઞાનચારિત્રની આરાધના નથી જ કરી, અને દર્શનપદથી જ કાર્ય સાધ્યું. એમતો નજ મનાય. ॥ બીજું પ્રશ્ન કરનારે જેમ એમ કીધું કે એકપદની આરાધના જો મુક્તિ ન આપે, તો નવપદોના સમુદાયની આરાધના કેવી રીતે મુક્તિ આપશે? વિગેરે તેનું સમાધાન એ છે કે સમુદાયના એક દેશમાં અવિદ્યમાન એવી શક્તિ સમુદાયમાં દેખાય છે. જુઓ વાંસની ચીરીઓની સાદડી બને છે. મકાનમાં પેસતા વરસાદના પાણીને રોકવાનું સામર્થ્ય વાંસની એક ચીરીમાં નથી. તે સામર્થ્ય ચીરીઓના સમુદાયથી બનેલી સાદડીમાં દેખાય છે. વલી દરેક પદ પણ સર્વથા મુક્તિનું કારણ નથી-એમ ન સમજવું. કારણકે દરેક પદની આરાધના અમુક અંશે ઉપકારિ હોવાથી દેશોપકારિ છે. જે પદાર્થ દેશોપકારિ (અમુક અંશે ઉપકારી) હોય, તેને પોતાનું કાર્ય બજાવવા માટે બીજા પદાર્થોની સહાય લેવીજ પડે. વ્યવહારમાં પણ એમ દેખાય છે કે-અલ્પ શક્તિવાળાને બીજાની સહાય લેવી પડે છે. તાત્પર્ય એ કે જેમ સમુદાયથી સાધ્ય એવું કાર્ય-તેના

એક દેશથી ન થઇ શકે. તેવી રીતે નવેપદોની આરાધનાથી જે મુક્તિલાભ રૂપ કાર્ય સાધવાનું છે, તે કેવલ (એકલા) એકપદની આરાધનાથી ન સાધી શકાય.

પ્રશ્ન—જ્યારે. આપ એમ કહો છે કે નવપદોની આરાધના મુકિત આપે છે, ત્યારે એમ સિદ્ધ થયું કે મુકિતની પ્રાપ્તિમાં નવેપદોની આરાધના કારણભૂત છે પણ તત્ત્વાર્થ સૂત્રમાં તો ૧ સમ્યગ્દર્શન ૨ સમ્યગ્જ્ઞાન ૩ સમ્યક્ચારિત્ર આ ત્રણ મોક્ષના કારણો છે એમ કીધું છે. જુઓ '**सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः**' અહીં દર્શનાદિ ત્રણ પદો કહ્યાં, અને બાકીના છ પદો ન કહ્યાં. વલી વિશેષાવશ્યકમાં તો જ્ઞાન અને ચારિત્ર બેજ પદો મોક્ષના કારણ કહ્યા છે, બાકીના સાત પદો નથી કીધા. જુઓ '**ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः**' આ બધું સાંભળતાં મને એ પ્રશ્ન થાય છે કે એક મુકિતપદને મેળવવામાં ઉપર કહ્યા પ્રમાણે ઓછા વધતા કારણો કઇ અપેક્ષાએ કીધા હશે?

ઉત્તર—પોતાની મેળે ગુરૂમહારાજની અપેક્ષા રાખ્યા સિવાય સૂત્રનો યથાર્થ આશય નજ સમજાય કહ્યું છે કે **सव्वे सुत्तत्था गुरुमइहीणा सर्वे सूत्रार्था गुरुमत्यधीनाः** ॥ માટે પ્રસ્તુત પ્રશ્નના સમાધાનમાં એ સમજવું કે મુકિતના ઉપર જણાવેલા જે ત્રણ કારણો છે. તે-દર્શનાદિને પામવાના કારણો પંચપરમેષ્ઠિ છે. એટલે પંચપરમેષ્ઠિની આરાધનાથી દર્શનાદિનો લાભ થાય. અને દર્શનાદિની આરાધનાથી મુકિત પમાય. એટલે મુકિત મેળવવાના પરંપર કારણો પાંચ છે. અને અનંતરકારણ-તપનો ચારિત્રમાં અન્તર્ભાવ કરતાં ત્રણ છે એમ સમજવું. આ અપેક્ષાએ નવેપદોની આરાધના મુકિતનું કારણ છે એમ કહેલ છે વિશેષાવશ્યકમાં દર્શનનો જ્ઞાનમાં અન્તર્ભાવ કરીને **ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः** એમ કહેલ છે બાકી વસ્તુતઃ મુકિતના કારણો ઓછા વધતા નથી કીધા–ટુંકામાં તાત્પર્ય એ સમજવું કે નવપદોમાં પણ સમ્યગ્દર્શનાદિ ત્રણની પણ આરાધના છે–એટલું તો ધ્યાન બહાર નજ હોવું જોઇએ કે અરિહંતાદિ પરંપરકારણોની પરમ ઉલ્લાસથી નિર્મલ સેવનાથી સમ્યગ્દર્શનાદિ અનન્તર કારણોનો લાભ થાય છે અને અનન્તર કારણોની સેવનાથી સ્વર્ગાદિ યાવત્–મુકિતપદ પણ મેળવી શકાય છે આવો અપૂર્વ ભાવ નવપદોની આરાધનામાં સમાયેલો હોવાથી કયો બુદ્ધિમાન્ પુરૂષ નવપદોની આરાધના કરવામાં ઉજમાલ ન થાય? અર્થાત્–દુર્લભ એવી મનુષ્ય જીંદગીને સફલ કરવા નવપદોની આરાધના કરવીજ જોઇએ. કે જેમાં સંપૂર્ણ પ્રકારે મોક્ષના અંગોની આરાધના સમાયેલી છે. આ પ્રસંગે એ પણ સમજવા જેવું છે કે જ્યારે આપણે નવપદમય સિદ્ધચક્રની સાત્ત્વિકી આરાધના કરીશું ત્યારે કર્મોના બંધથી મુકત થઈ શકીશું. મહાપુરૂષોએ ત્રણ પ્રકારની આરાધના કહી છે. તે આ પ્રમાણે–૧–સાત્વિકી આરાધના–૨ રાજસી

આરાધના ૩ તામસી આરાધના તેમાં સાત્વિકી આરાધનાનું સ્વરૂપ એ છે કે આત્મ કલ્યાણની બુદ્ધિથી નિષ્કષાયભાવ ધારણ કરી, નવેપદોનું યથાર્થ રહસ્ય સમજી બહુમાન પૂર્વક અવિધિ દોષ ટાલીને જે નવપદોની આરાધના કરવી તે સાત્વિકી આરાધના કહેવાય ।૧। અને રાજસી આરાધનાનું સ્વરૂપ એ છે કે કરેલી આ આરાધનાથી મને આ ભવમાં કીર્તિ, યશ, સંતતિ, અને ઋદ્ધિ આદિ પ્રાપ્ત થાય, એવા ઇરાદાથી અથવા તો ભવાન્તરમાં ઇન્દ્ર પદવી, ચક્રવર્ત્તિ પણું ઇત્યાદિ મને મલે, એવા ઈરાદાથી કરેલી નવપદોની આરાધના તે રાજસી આરાધના કહેવાય. આવી આરાધના નિયાણાવાલી હોવાથી સામાન્ય ફલ આપે પરંતુ વિશાલકર્મ નિર્જરાદિ વિશિષ્ટ ફલદાયક હોતી નથી ।।૨।। તામસી આરાધના એવી છે કે-જે-ક્રોધથી, માનથી, માયાથી અને લોભથી, અથવા બીજાની બીકથી તિરસ્કારપૂર્વક આરાધના કરવામાં આવે, અથવા તો શત્રુનો નાશ કરવા માટે કરેલી નવપદોની આરાધના જે કેવલ દુર્ગતિનેજ આપે. આવી આરાધનાને ભગવંતે તામસી આરાધના કહી છે. ।।૩।।

અપૂર્ણ.


# પૃથ્વીચંદ્ર અને ગુણસાગર

યાને

## એકવીસ ભવનો સ્નેહસંબંધ

[ મૂલકર્તા : રૂપવિજયજી ગણિ ]

અનેક અન્તર્ગત કથાઓથી ભરપૂર, વૈરાગ્યમય છતાં વાંચવામાં રસ ઉત્પન્ન કરે તેવો આ ગ્રંથ હરેક જૈન-જૈનેતરે અવશ્ય વાંચવા તેમજ મનન કરવા યોગ્ય છે.

ક્રાઉન સોલ પેજી સાઇઝમાં, હોલેન્ડના ગ્લેજ કાગળ ઉપર સુંદર છપાઈ તથા આકર્ષક બાઇન્ડીંગ ફરમા લગભગ ૪૦ છતાં કીંમત માત્ર રૂપિયા ત્રણ.

—મળવાનાં સ્થળ—

૧ મહેતા નાગરદાસ પ્રાગજીભાઇ
દોશીવાડાની પોળ,
અમદાવાદ.

૨ સંઘવી મુલજીભાઈ ઝવેરચંદ
પાલીતાણા.

૩ મેઘરાજ જૈન પુસ્તક ભંડાર
પાયધુની-મુંબઈ.

૪ જૈનધર્મપ્રસારક સભા
ભાવનગર.

૫ મોહનલાલ રૂગનાથ
પાલીતાણા.

# ધર્મ વિચાર

( લેખક: ઉપાધ્યાય શ્રી સિદ્ધિમુનિજી )

( ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૯૦ થી અનુસંધાન. )

(૮) કહે છે કે, બાલ્યાવસ્થા નિર્દોષ–પ્રભુ જેવી હોય છે. આ કાંઈ આખું સત્ય નથી. બાલક વખતનો કેવી રીતે નકામો વ્યય કરે છે તેનું તેને બીલકુલ જ્ઞાન ને ભાન હોતું નથી. તેનામાં છુપાં, આગળપર ફળનારાં સર્વ ઝેરી બીજો રહેલાં હોય છે. રાગ, દ્વેષ, મોહ, બધું ત્યાં અણખીલ્યું–અણફાલ્યું પડેલું જ હોય છે, તેની બધી નાની નાની વાતો–રમતો ભાવિ કાલની સર્વ ઉથલપાથલોની શાળાજ સમજવી. બાલક ભૂલે છે, પણ શું તે બુદ્ધિપૂર્વક ભૂલે છે? કેટલીક વાતો બુદ્ધિપૂર્વક ભૂલવામાં મહત્તા–પ્રભુતા હોય, નહિ કે ક્ષયોપશમના અભાવથી ભૂલવામાં બાલકનાં હાસ્ય મૃદુ અને મનહર લાગે, પણ એ મૃદુતા અને મનહરતામાં પ્રભુતાનો દાવો કરવો એ અજ્ઞાન છે, મોહ છે. બાલકમાં પ્રભુતા માનનારાઓ, કહો કે, અજ્ઞાનવાદીઓ છે. એમની એ દૃષ્ટિ મિથ્યા છે. નિર્ભય, નિષ્ઠુર ને બેદરકાર હોય તો, અજ્ઞાની કરતાં જ્ઞાની વધારે જવાબદાર છે; અન્યથા સર્વદા ને સર્વત્ર જ્ઞાની કરતાં અજ્ઞાની જ વધારે જવાબદાર છે. અજ્ઞાની ન્યાયને અક્ષમ હોય; અયોગ્ય ન હોય. તે અક્ષમ હોવાથી જ ઇન્સાફ ત્યાં મૌન છે, નહિ કે અજ્ઞાન હોવાથી.

આમાં અપવાદ મહાનુભાવ વિશિષ્ટ બાલકનો જ હોઈ શકે, જેવી રીતે મહાનુભાવનું અજ્ઞાન ગુન્હાની મહત્તા ઘટાડી નાખે છે. તેવી રીતે તેવાં વિશિષ્ટ બાલકોની અપરાધરૂપ બાલ રમતો પણ દોષની મહત્તા ઓછી કરી નાખે છે. કર્તવ્યનું માપ લેવામાં ઈન્સાફના કાંટાની ધારણ સમતોલ હોતાં છતાં પણ આધ્યાત્મિક માપના વિચિત્ર ફેરફારોથી આમ બનવા પામે છે. ઇતિહાસ અને આજે પણ થતા અનુભવો સ્પષ્ટ કરે છે કે; મહાનુભાવ બાલકો રમે છે, પણ તે હૃદયના રસ વગર જ, મહાવીરોની ક્રીડામાં–બાલરમતમાં પ્રાય: વીર્યસ્ફુરણ માત્ર જ છે; નથી ત્યાં પૌદ્ગલિક અસ્મિતાની ખાસ લાગણીઓ, આજ કારણથી તેઓ અવસરે સ્વાભાવિક કે નજીવા ધર્મ સમાગમે આત્મોત્કર્ષતા પંથ તરફ વળવા કે ત્યાં આગળ કદમ ધરવા પોતાના દિલને દોરે છે. એ મહાનુભાવોનું સર્વ કે અમુક બાલવર્તન ફક્ત યોગ્ય સમયને લાવવા પુરતું જ હોય કે ભોગ્ય કર્મ ભોગવવા જ તે બાલ્ય રમતું હોય. એટલાજ માટે 'સંતો' એ કહ્યું છે કે, 'વય રમે છે, આત્મા

નથી રમતો.' સાવદ્ય નાવ ક્રીડાંના કર્તા 'અઈમુત્તા' મુનિની' તરફ હાસ્યનજરે જોનારાઓને ભગવાન શ્રી 'મહાવીરે' ઓળંભો દીધો તે આજ રહસ્યને આભારી છે. આચાર્ય મહારાજાએ શ્રી'વજ્રસ્વામી'ને ક્ષોભ થવા ન દીધો તે પણ આવા જ હેતુથી, અતીવ ઉંડુ ને દીર્ઘ જોનાર પંડિત–ગીતાર્થ જ કહી શકે કે, અમુક બાલક નિર્દોષ છે. બાકી મોહની ચેષ્ટાઓમાં ગમે તે મોહીને મન ગમે તે ફાવતું બાલક પ્રભુ બની શકે છે. કયા રાગીને મન પુત્ર 'ભા' અને સ્ત્રી ,ગુરૂ' બની શકતાં નથી? આમ છતાં 'જયંતી' શ્રાવિકાના પ્રશ્નોત્તરમાં શ્રીભગવંતે અમુકોને 'ભલા' કહ્યા છે, તેમ બાલકોને પણ તેમની કાયિક, વાચિક અને માનસિક અશકિતની દૃષ્ટિએ, જો 'ભલાં' કહેવામાં આવે તો તેમાં ઓછો જ વાંધો લઈ શકાય. પણ એ 'ભલા' અને 'નિર્દોષ' શબ્દોમાં આસ્માન જમીનનું અંતર છે એ કદિપણુ ભૂલવું ન જોઇએ. 'બાલક ગમે છે' એ વાતમાં તો કઇએ વજુદ નથી. સંસારની કોઇ ચીજ ગમે છે, મનહર લાગે છે, પ્રેમ ઉત્પન્ન કરે છે, વિગેરે વિગેરે એ બધા મોહના ફંદો છે, જ્યારે નિર્દોષતા એ કોઇ જુદો જ આધ્યાત્મિક ભાવ છે, કે જે સામાન્યતઃ ક્ષાયોપશમિક જ્ઞાનીઓમાં તારતમ્યથી સંભવે છે, અને સર્વથા ક્ષાયિક જ્ઞાની–સર્વજ્ઞોમાં સંભવે છે. આથી એ સ્પષ્ટ છે કે, 'સંતો અને બાલકોની ચેષ્ટાઓ સમાન હોય છે.' એમ કહેનારાઓ આખીય ભીંત ભૂલે છે. સંતોની એકેએક ચેષ્ટા ઉમદા લક્ષ્યને અનુલક્ષી હોય છે, જ્યારે બાલકોની એકે ચેષ્ટામાં ઉમદા લક્ષ્ય હોતું નથી. જીવનની જરૂરીયાતો અને બીન જરૂરીયાતોને અનુલક્ષી કે અનનુલક્ષી તેઓ ઓઘથી કે અલ્પ જ્ઞાનથી જીવી રહ્યાં હોય છે. પછી ત્યાં પ્રત્યેકમાં નિર્દોષતાની–પ્રભુતાની વાત કરવી એ વ્યર્થ જ છે. એમાં બાલ–અજ્ઞાન 'ગુરૂડમ'નો દંભ પણ તેમના અંધ ભકતોથી સેવાતો હોય તો તેમાં નવાઈ નથી, પણ એ તો વળી અતિશય જ વ્યર્થ છે, અને તેથી તે અતીવ અતિ તિરસ્કરણીય છે.

(૯) વિધવા બ્હેનો! તમારી કમનસીબીનો પાર નથી. તમારાં દુઃખોનાં આંસુ લુછવા આવનારા ઘણાખરા કાંતો સ્વાર્થી હોય છે, અથવા તો અનીતિમાન 'બદમાસ' હોય છે. આમાંના એકે તમારાં દુઃખને દૂર કરનારા હોતા નથી, વિરૂદ્ધ, તમારા અંતરની આગને સંકોરી વધારનારા હોય છે. જાણે કે વિધવાઓમાંજ બધું પાપ આવી વસ્યું હોય તેમ તિરસ્કૃત કે પાપી નજરે નિહાળી, જે જગત તેમના વિષે અનેકાનેક પ્રશ્નો ઉઠાવે છે; તે જગત, ધર્મનો ઓછો વિચાર કરનારી, ધૂર્તને ચંચળ સધવાઓ જે અનીતિ કરે છે અને પોતાના વિધવાપણા માટે જે અનિષ્ટ વારસો મુકતી જાય છે, તે વિષે કેમ કાંઇ એકે પ્રશ્ન ઉઠાવતું નથી? તેમના પતિઓ પોતે પોતાની સ્ત્રીઓના અજ્ઞાનના કારણે સાચા કે કુટુમ્બની આબરૂના કારણે ખોટા બચાવ માટે બેઠેલા છે, તેથી એવો પ્રશ્ન

કોણ ઉઠાવે ? મનને મારવાની વાતો હેવી, અશક્ય, ધર્મના ઇજારદારોને ત્યાં હોય એવું કટાક્ષ કરનારાઓથી, ચંચળ સધવાઓને માટે કાંઈ પણ વ્યવસ્થા કરવાનું ચર્ચાય છે શું ? ત્યાં તો સતીત્વ અને પાતિવ્રત્યના આદર્શોની વાતો કરી મન મારવાની સલાહો અપાય છે. જાણે કે સધવા ચંચળ થતા મનને મારી શકવાની શક્તિ ધરાવતી જ હોય છે, વિધવાઓ હરગીજ નહિ.

'સધવાઓને વિષયતૃપ્તિનું સાધન હાજર છે માટે મન મારવું શક્ય છે;' એમ જો કોઈ કહેતું હોય તો તે ખરેખર, માનસશાસ્ત્રનો સાચો અભ્યાસી નથી. સ્રીઓનું ચંચળ મન વિષય કરતાં પસંદગી તરફ જ વધારે ખેંચાઇ જાય છે. વળી વિષયોનો ઉપભોગ એ મન મારવાનું સાધન છે એમ પણ જ્ઞાનીઓ કે અનુભવીઓ કહેતા નથી તેઓ કહે છે કે 'વિષયોપભોગથી ઇચ્છાઓ તૃપ્ત થતી નથી: વિરૂદ્ધ, આગમાં નંખાતાં કાષ્ઠોથી તે વૃદ્ધિને પામે તેમ વિષયના સતત સેવનથી ઇચ્છાઓ વધ્યા જ કરે છે. જેટલા વધારે પ્રમાણમાં હૃદયને શૃંગાર-રસમાં ઉતરવાનું થાય તેટલો જ ઇચ્છાઓનો વધારો ત્યાં થાય છે. નિઃશંક બહુ ખેલનારી સધવાઓ ધણીને મરેલો જોવા ચ્હાતી નથી, એનું કારણ ઢાંકપીછોડાની સગવડ સિવાય અન્ય કાંઇ પણ હોતું નથી. આ બધું જાણતાં છતાં સધવાઓને વિફરી ન જવા દેવાની ખાતર નીતિ અને મન મારવાની વાતો આગળ ધરવામાં આવે છે! એક સાથે 'બેમાં' નીતિ છૂટ આપતી નથી, એવી માન્યતા ધરાવ-નારાઓને મન, નીતિ 'એક પછી એક' એમ બેની કે તેથી વધારેની છૂટ આપી શકે છે! એવી નીતિમાં માનનારૂં માનસ દૂષિત કે અજ્ઞાન નથી શું ? જીવનમાં એક સાથે કે ભિન્નભિન્ન સમયે મળી 'બે' ભોક્તા નજ હોઈ શકે એવી નીતિ જ નારીજીવનમાં ઉપદેશવાનું યોગ્ય હોઇ શકે, અન્યથા સામાજિક શ્રેષ્ઠત્વ જગત-માંથી અદૃશ્ય જ થઈ જાય. બાકી વ્યક્તિગત તો પતિત થનારને સધવા, વિધવા કે કન્યા હોઇ નીતિને અવગણી ન અટકે તો તેને આ દુનીયામાં કોઇપણ અટ-કાવી શકે નહિ.

ઉપરાંત, ઓ! વિધવાની દયાના ચિંતકો! જરૂર તમને કોઇ પૂછી શકશે કે, પુખ્તવયની બાળાઓ; સધવાઓ અને વિધવાઓની નીતિમાં ખલલ ક્યાંથી થાય છે? કોણ કરે છે? એમનું સત્યાનાશ વાળનારા તે પુરૂષો સિવાય અન્ય કોણ છે? યોગ્ય વયની કન્યાઓ, ગમે તે કારણે પુરૂષ પ્રસંગ વિનાની સધવાઓ અને વિધવાઓ; એમનાથી ન રહેવાય બ્રહ્મચર્ય પાળી ન શકાય, આવા વિચારો ફેલાવવામાં આવે છે તેનું પરિણામ હલકટ વૃત્તિના યુવાનોના દિલમાં ઘણું જ ખરાબ આવી, તેઓ તેમના, ખાસ કરીને વિધવાઓના શિયલનાશના પ્રયત્નો કરવામાં પ્રવૃત્ત થાય છે. અને તેમને હાથમાં લેવાને બનતી બધીય હીકમતો અજમાવી જુવે છે. આપણાથી બ્રહ્મચર્ય ન પળાય, એવી ભાવના વિધવાઓમાં ઉપજાવવાનો પ્રયત્ન કરવો, એ કેવલ તેમનામાં ઝેર જ વાવવા જેવું છે. પવિત્ર

માર્ગે જવા મથતી વિધવાઓને કોઇપણ રીતે અપવિત્રતાની ઊંડી ગર્તામાં નાંખી દેવાનો પ્રયત્ન થાય, એ બ્રહ્મચર્યની મહત્તા માનનારા આર્યદેશને માટે શું ઓછું શોચનીય છે? અખંડ પ્રેમની કથાઓનાં મહત્ત્વ ગાનારાઓ આજે જીવનના અખંડ પ્રેમના સૂત્રને પોતાના હાથે જ, ગુંચવવા પ્રયત્ન કરી રહેલા જોઈ કયા આર્ય સંસ્કૃતિના અભ્યાસકને ખેદ ન થાય?

કોઇ એકાદા શહેરની કચરાપેટીમાં તાજું જન્મેલું બાલક જણાય છે. સુકનારી હાલના ચાલુ શિક્ષણથી શિક્ષિતા એક કન્યા છે. પણ લોકો કોની ચર્ચા કરે છે? વિધવાઓની જ હલકીવૃત્તિનાં મનુષ્યો પોતાની જાતને નાપાક અને અનીતિમાન જાણતાં હોઇ, તેઓ પોતાનામાં અન્ય કોઈથી સ્હેજ પણ ઉતરતાપણું ન જણાય તેની ખાતર 'જુવો, ઉપાશ્રયે જનારાં કે દેવદર્શનાદિ કરનારાં પણ આવાં અકાર્ય કર્યા સિવાય રહી શકતાં નથી' એમ જણાવી, 'જેવાં અમે તેવાં તમે' એમ સમતુલામાં બેસી જવા આખી વિધવા જાતિને વગોવવા તૈયાર થાય છે. એ વાત ખરી છે કે, ગોળ(ધોળ)માં કન્યાની તાણથી કુંવારા રહીજનારા કોઇ કોઈ ઉમેદવારો પુખ્તવયની કન્યાઓને પણ નિન્દે છે, પણ તેવા સ્વાર્થી ઓછા જ એટલે અસ્થાને પણ ગંગાસ્વરૂપ વિધવાઓનો જ મરો. (અપૂર્ણ)


બહાર પડી ચૂકેલ છે.

## શબ્દરત્નમહોદધિ શબ્દકોષ ભાગ ૨ જો.

### સંગ્રાહક, પન્યાસજી શ્રીમુક્તિવિજયજી.

સંસ્કૃત ભાષા સરળ રીતે બાળજીવો સમજી દરેક જૈન અજૈન ગ્રંથોનું વાસ્તવિક અર્થ સ્વરૂપ સમજી શકે, તેવી પદ્ધતિએ જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયનીતિ સુરીશ્વરજી મહારાજની કોષ બનાવી, તેનું પ્રકાશન કરાવી, જનતાને તેનો લાભ લેતા કરવાની મહેચ્છા હતી, તે બાર વર્ષની મહેનતે આજે પરિપૂર્ણ થવા પામેલ છે.

આવા અલભ્ય કોષના બે ભાગો, ક્રાઉન આઠ પેજી એકંદર ૧૮૦૦ પૃષ્ઠના, ગુરૂવર્યોના શોભિત ફોટાઓ અને પાકા પુંઠાં સાથેના આ ગ્રંથના પહેલા ભાગના રૂા. ૮–૦–૦, અને બીજા ભાગના રૂા. ૧૦–૦–૦ પોસ્ટેજ જુદું રાખવામાં આવેલ છે.

પહેલો ભાગ મેળવનારાએ બીજો ભાગ માગશર માસમાં બાઈંડીંગ થઇ જવાથી મંગાવી લેવા ધ્યાનમાં રાખવું.

જથાબંધ લેનારને યોગ્ય કમીશન આપવામાં આવશે.

લખો.—શ્રીવિજયનીતિસુરિજી જૈન લાયબ્રેરી,
૫૯/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ

# કેટલીક મહત્વની બાબતો

(લેખક-**મણીલાલ ખુશાલચંદ પારેખ.**)

૧. સામાયકના ૩૨ અને પૌષધના ૧૮ દોષ તથાપ્રકારની ક્રિયા કરનારના સમજવામાં આવે તો ઘણાખરા નકામા દોષો લાગે છે, તે નિવારી શકાય. માટે સામયિક અને પોષધ પારતી વખતે તે દોષો બોલવાની પ્રવૃતિ કરવાની જરૂર છે, અને તેથી હરેકે તે મોઢે કરી લેવા જોઈએ.

૨. મુનિવર્ય પ્રતિક્રમણ ક્રિયામાં '**ઠાણેકમણે ચંકમણે**' બોલી રહે છે, ત્યારે શ્રાવકગણ '**ધન્ય મુનિરાજ**' કહી મુનિપણાની ભાવનાને અનુમોદન આપે છે, તેમ પૌષધાતી '**ગમણાગમણે**' કહી રહે ત્યારે '**ધન્ય પૌષધાતી**' એમ કહેવાની પ્રવૃત્તિ કરવાની જરૂર છે.

૩. કોઈપણ સાધુ-સાધ્વી ઉતરવાના સ્થળમાં તે સ્થાનના વહિવટદારો સાધુ-સાધ્વી તે સ્થાનમાં હોવા છતાં, પ્રકાશ માટે બત્તી મૂકતા ન હોવાથી મુનિગણને ઉપયોગ આપવો પડે છે, અને તેથી તેમને દોષ લાગે છે. આજના દેશકાળે શારીરિક અને માનસિક શિથિલતા વગેરે કારણે પ્રકાશની જરૂરત રહે છે, જેથી મુનિગણને દોષ લગાડવો ન પડે તેવી રીતે તેવા સ્થાનરક્ષકોએ સમયસર બત્તી મુકવા ગોઠવણ કરવા સાથે જીવરક્ષા નિમિત્તે બત્તીના સાધન ઉપર ઝીણું જાળીવાળું કપડું રાખવાની કાળજી રાખવી જોઈએ

૪ જ્યાં મુનિવર્ય હોય છે ત્યાં વ્યાખ્યાન શ્રવણનો અને ધાર્મિક ક્રિયાકાંડનો લાભ મળે છે. પરંતુ આર્યક્ષેત્રના સેંકડો ગામડાઓને મુનિપુંગવના અભાવે તેવા લાભથી લાંબો સમય વંચિત રહેવુ પડે છે, જેથી અભ્યાસક શ્રાવક ગણે પર્વ દિવસોમાં ધર્મકથાનક વાંચવાની પ્રવૃત્તિ કરવાની આવશ્યકતા છે.

૫ પ્રતિક્રમણાદિ ક્રિયા વખતે મુનિવર્ય પગામસઝાય, અતિચાર, ઠાણેકમણે ચંક્રમણે કહે તે વખતે શ્રાવકગણ પોતાનાં સૂત્રો ઇત્યાદિ બોલે છે, તેમ **કરેમિભંતે** અને **ઇચ્છામિ ઠામિ** બોલે છે, તે વખતે તે સૂત્રો યા તે સૂત્રોમાં જેટલો ભાગ શ્રાવકગણ તે સૂત્રો કહે તેના કરતાં જુદું આવે છે, ત્યાંથી અગર તેટલો ભાગ શ્રાવકગણે જુદો બોલવો જોઇએ તેમજ પૌષધવાળા કરેમિભંતે ઉચ્ચારે ત્યારે પણ શ્રાવકગણે **જાવનિયમં** એમ બોલવું જોઇએ.

૬ જે સ્થાનોમાં મહર્ષિગણ હોય તે સ્થાનમાં ઘડિયાળ નથી રખાતી, તેવા સબબે તે ગણને ઘડિયાળો રાખવી પડે છે. માટે તેવા સ્થાનોમાં અવશ્ય ઘડિયાળો રાખવી, કે જેથી તે સાધન સામાયિકદિ ક્રિયા કરનારાઓને પણ ઉપયોગી થઇ પડે.

# પાર્શ્વનાથ પ્રભુ આરતી

(રચયિતા. અમૃતલાલ ઉજમશી-ગંધાર)

(રાગ-હું આરતી ઉતારૂં રાધેશ્યામનીરે)

હું તો આરતી ઉતારૂં, પ્રભુ પાર્શ્વની રે.
પ્રભુ પાર્શ્વની રે, જીનંદની રે. હું તો૦ ૧
માતા વામા નંદન, પ્રભુ પાર્શ્વજી રે.
પિતા અશ્વસેન, ભૂપ........રે. હું તો૦ ૨
પ્રભુ દેશ કાશી, વાણારશી રે.
આયુ વરસ સો, ને એક રે. હું તો૦ ૩
પ્રભુ કેવળ જ્ઞાન, લઇ પેખ્યુ રે.
પ્રભુએ ઉઘાડ્યા, મોક્ષ તણા દ્વાર રે. હું તો૦ ૪
આરતી પાર્શ્વ પ્રભુ, ની ઉતારૂ રે.
અમૃત કહે લાલ, કર જોડ રે. હું તો૦ ૫


બહાર પડી ચૂકયો છે

## પંચસંગ્રહ

## ગૂજરાતી ભાષાંતર ભાગ બીજો

**પૂ. આચાર્ય શ્રીમાન્ ચંદ્રર્ષિએ બનાવેલ મૂળ અને આચાર્ય શ્રીમાન્ મલયગિરિજીએ કરેલ ટીકાનું ગૂજરાતી ભાષાંતરઃ—**

卐

આ ગ્રંથમાં કર્મપ્રકૃતિમાં વર્ણવેલ બંધન સંક્રમણાદિ આઠ કરણનું સ્વરૂપ અને સપ્તતિકા—છઠ્ઠા કર્મગ્રંથનું સવિસ્તર સ્વરૂપ આપવામાં આવ્યું છે. ભાષાંતરના પહેલા ભાગમાં પહેલેથી પાંચ કર્મગ્રંથનું તથા ઉદય અને સત્તાનું સ્વરૂપ પૂર્ણ રીતે આપવામાં આવ્યું છે. એટલે આ બંને ભાગમાં છએ કર્મગ્રંથ અને કર્મપ્રકૃતિ તદુપરાંત તેને લગતા બીજા અનેક વિષયોનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. કર્મગ્રંથના અભ્યાસીને આ બંને ભાગ બહુ ઉપયોગી છે. ગ્રંથ સરળ થાય તે માટે ઉપયોગી ટીપ્પણો પણ આપ્યા છે. પહેલા ભાગના રોયલ આઠ પેજી સાઇઝના ૮૧ ફરમા છે, બીજા ભાગના ૯૧ ફરમા છે. **કિંમત પચસંગ્રહ ભાષાંતર ભા. પહેલો ૪-૮-૦ ભાગ બીજો ૫-૦-૦** રાખવામાં આવી છે, બંને ભાગ સાથે લેનારને આઠ રૂપિયામાં આપવામાં આવશે.

પ્રાપ્તિસ્થાનઃ—**હીરાલાલ દેવચંદ શાહ**, જૈન સોસાયટી નં. ૧૫, એલીસબ્રીજ **અમદાવાદ.**

# "મૂર્તિપૂજાના વિરોધમાં...."

લેખક– મુનિ ન્યાયવિજયજી (અમદાવાદ.)

( ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૫૦ થી અનુસંધાન )

પૂર્વાચાર્યોએ આભૂષણરૂપ અણમુલ સાહિત્ય જેમાં તત્વજ્ઞાન, દાર્શનિક-વિચારણા, ઇતીહાસ, ચરિત્ર–વ્યાકરણ–કાવ્ય, ન્યાય–તર્ક સાહિત્યના ગ્રંથો બનાવ્યા છે. જેનાથી એકલા જૈન સાહિત્યજ નહિ–બલ્કે ભારતી સાહિત્યની શોભામાં અપૂર્વ વૃદ્ધિ થઈ છે,

અહીં હું કોઇની પ્રશંસા કે નિંદા કરવા નથી બેઠો માત્ર સત્યવસ્તુ–સ્થિતિનું નિદર્શન જ કરાવું છું. મારો કહેવાનો આશય એટલોજ છે કે સ્થા–સંપ્રદાયે એક મૂર્તિપૂજાના વિરોધ સાથે મૌલિક જૈન–સાહિત્યનો, જીનવાણીનો અને શ્રુતધર, પૂર્વધર આચાર્ય ભગવંતોની દીવ્ય વાણીનો પણ વિરોધ કર્યો અને સાથે જ પોતાના સંપ્રદાયમાં અજ્ઞાનતા વધારી.

હમણાં હમણાં વીસમી સદીમાં એ સંપ્રદાયમાં શિક્ષણ–સંસ્કૃત–અને પ્રાકૃત સાહિત્યનો અભ્યાસ થવા માંડયો છે, પરંતુ એતો શ્વેતાંબર સંપ્રદાયની દૃષ્ટિએ તો પાશેરામાં પુણી જેટલું જ છે. આ સિવાય જૈનશાસનના પ્રભાવિક પુરૂષોનાં સાચાં ચરિત્રોથી પણ સ્થા.–સંપ્રદાય વંચિત રહે છે.

જેમકે ભારત અને ભારત બહાર જૈન ધર્મનો–વીરશાસનનો–વિજયધ્વજ ફરકાવનાર સમ્રાટ સંપ્રતિ અને તેમના ગુરૂદેવશ્રી આચાર્યશ્રી સુહસ્તીસૂરિજી મહારાજનો પરિચય લ્યો–સ્થા.–સંપ્રદાયના લેખકો એ સમ્રાટનુ જીવન લખશે ખરા? તેના યુધ્ધનું, તેની વીરતાનું કે જૈન ધર્મ પ્રચારનું વર્ણન કરશે? કિન્તુ જૈન ધર્મ પ્રચારના મુખ્ય અંગરૂપ હજારો જીન મંદિરો, લાખો જીન મૂર્તિઓ બનાવરાવી આદિનું કયાંય વર્ણન જ નહિ આવે. આવીજ રીતે મહારાજા કુમારપાલ અને ક,કા,સ ભગવાન શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યજી મહારાજના પરિચયમાં કુમારપાલની યુદ્ધ વીરતા. અહિંસાપાલન, આદિનું વર્ણન કરશે પરન્તુ કુમારપાલે તારંગાજી સિદ્ધાચલજી ગીરનારજી ઉપર તથા અન્ય સ્થાનોએ બંધાવેલ ભવ્ય જીનમંદિરોનાં અને આચાર્યદેવકૃત મૌલીક સાહિત્યનો લેશ પણ પરિચય નહિં જ આપે તેમજ વસ્તુપાલ તેજપાલ વિમલમંત્રી; ચાંપાશાહ વગેરેના

૧ બ્યાવરના સ્થા. જૈન ગુરૂ કુલ તરફથી બાલ અભ્યાસકો માટે જે ચોપડીઓ બહાર પડી છે, તેમાં આવુંજ વર્ણન છે. ખુબી એ છે કે અજૈન વીરપુરૂષોકે મહાત્માઓનાં સત્ય જીવનચરિત્ર ભણાવાય, પરન્તુ જૈન ધર્મના પ્રાભાવિક મહાપુરૂષોનાં સત્ય જીવનચરિત્ર પુરીરીતે ન ભણાવાય, આ ઓછા દુઃખની વાત છે?

પરિચયમાં પણ આમજ બને છે. એટલે આજનો કોઇ અંગ્રેજ વિદ્વાન મહાત્મા ગાંધીજી કે જવાહરલાલજી નેહરૂનો પરિચય-જીવનચરિત્ર લખે પરન્તુ તેમાં સત્યાગ્રહના અસહકારના યુદ્ધનું વર્ણન ન કરે તો એ જીવનચરિત્ર જેમ અપૂર્ણ અને અર્ધસત્ય કહેવાય, તેમ સ્થા.-સંપ્રદાય પણ જૈનધર્મના મહાપુરૂષોનાં ચરિત્રથી અપૂર્ણ રીતે જ જાણકાર બને છે.

ખરી રીતે આ તેમનો પક્ષપાત કે સાંપ્રદાયિક મમત્વજ લેખાય, ત્રણે ફિરકાના ઐક્યની વાતો કરવી, જૈનધર્મમાંથી ફિરકે બંદીના ગઢને ધરાશાયી કરવાની જાહેરાતો કરવી, સાંપ્રદાયિક વિષને ફેંકી દેવાની જાહેરાતો કરવી, અને સાંપ્રદાયિક મમત્વને પોષવું, એ બેધારી ચાલ આ યુગમાં ફાવી શકે તેમ નથી.

પોતાને નિષ્પક્ષ, સાંપ્રદાયિક મમત્વ રહિત જાહેર કરનાર મહાનુભાવોએ એટલી ઉદારતા કે નિષ્પક્ષવૃત્તિ કેળવવી જ જોઇએ કે અમે જેનું જીવનચરિત્ર આપીએ છીએ તેનું યથાર્થ વર્ણન તો આવે જ ભલે તમને ન ગમતી વસ્તુ સંક્ષેપમાં આવે, પરન્તુ પ્રાણભૂત મૂલવસ્તુનો ઉલ્લેખ જરૂર જ થવો જોઇએ." આટલું થાય તો જ સહિષ્ણુતા. ઉદારતા કે મહાનુભાવતાની વાતો શોભે. સ્થાનક માર્ગી સંપ્રદાયના વિદ્વાનોને નિષ્પક્ષપણે મારે એટલું તો કહેવું જ જોઈએ, કે તમે મૂર્તિના વિરોધ સાથે જૈન ધર્મના ગૌરવવન્તા ભૂતકાલીન ઈતિહાસને ન છુપાવો, તેનો અપલાપ ન કરો. એમ કરવામાંજ તમારી શોભા છે. બાકી સત્ય ઈતિહાસ છુપાવવાથી આત્મવંચના તો થશે જ, સાથે જ જૈનધર્મના ગૌરવવન્તા ભૂતકાલીન ઇતીહાસનાં સુવર્ણ પાનાંને આચ્છાદવાના પાપના ભાગીદાર થશો. તમારામાં યદિ સત્ય ઈતીહાસ આપવાની હિમ્મત નિષ્પક્ષવૃત્તિ કે ઉદાર ચરિતતા ન હોય તો કાંઇ ચિંતાની વાત નથી, તમે એ પૂર્વ મહાપુરૂષોનાં ચરિત્રો લખવાનું જ બંધ કરો. એ પૂર્વ મહાપુરૂષોનાં ચરિત્રો અસત્ય-અપૂર્ણ આપવા કરતાં ન આપવામાં લગારે વાંધો નથી જ યદિ તમે બુદ્ધદેવ મહમ્મદ પેગંબર, રામચંદ્રજી કે શ્રીકૃષ્ણજી તથા અન્યધર્મના મહાપુરૂષોનાં યથાર્થ ચરિત્રો આપતાં નથી અચકાતા તો જૈનધર્મના જ પ્રભાવિક મહાપુરૂષોનાં સત્ય જીવન ચરિત્રો આપતાં અચકાઓ, અને છતાંયે પોતાને નિષ્પક્ષ કે ઉદાર કહેવડાઓ, એ તો અનુચિતજ કહેવાય.

અર્થાત્ સ્થા.-સંપ્રદાયે જીનમૂર્તિના વિરોધ સાથે જૈન સાહિત્ય ઇતીહાસ અને તત્વજ્ઞાનની પણ અવગણના જ કરી છે. અપૂર્ણ

# शत्रुंजय-अष्टक

## रचयिता-प्रवर्तक शान्तिविमलजी

॥ मदाक्रांता व्रतमिदम् ॥

**सौराष्ट्रे यः प्रथममगमद्देवदेवस्य स्थानम्**
**नाभेयस्याद्रिशिखरगतं पूज्यमानं त्रिलोके।**
**दृष्ट्वा हर्षात्स्वजननफलं सार्थकं मन्यमानम्**
**पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥१॥**

અર્થ—જે વિમલગચ્છેશ્વર હિંમતવિમલજી ગણાધીશ સોરઠ દેશમાં પ્રથમ પોતે ગયા ને ત્યાં શત્રુંજય પર્વતના શિખર ઉપર દેવના દેવને નાભીરાજના પુત્ર રૂષભદેવનું મંદિર ત્રિલોકમાં પૂજાયેલ એવાને જોઈને પોતાના જન્મને સાર્થક માનતા વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું. ॥૧॥

**अन्यैश्चैत्यैः शतपरिमितैः शोभमानं समन्तात्**
**तस्मिंश्चैत्ये भविजननुता मूर्तिराद्येश्वरस्य।**
**यां दृष्ट्वा योऽभवदतितरां मानसे हर्षवान् तम्**
**पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥२॥**

અર્થ—બીજાં ચારે બાજુ રહેલાં દહેરાસરોથી અતિ શોભાયમાન તે દેરાસર છે. તે દેરાસરને વિષે ભવિજનોએ સ્તુતિ કરેલી આદિનાથની મૂર્તિને જોઈનેજ જે મહારાજ પોતાના મનમાં અત્યન્ત હર્ષવાળા થયા તે વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું.

**तीर्थं रम्यं भवति धरणौ नोपमा यस्य लोके**
**नाम्ना शत्रुंजय इति जनाश्चक्षते भारतेऽस्मिन्।**
**तत्रायान्तं मुनिजनयुतं वन्द्यमानं जनौघैः**
**पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥३॥**

અર્થ—પૃથ્વીને વિષે સુંદર તીર્થ છે જેની ઉપમા આ લોકને વિષે છેજ નહિ. આ ભારતવર્ષને વિષે જેને માણસો નામ વડે કરીને શત્રુંજય એ પ્રકારે કહે છે, ત્યાં આવેલાને જન સમુદાયે વન્દના કરેલા બીજા મુનિઓની સાથે આવેલા, વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું. ॥૩॥

**देवासि त्वं गुणगणयुतो मादृशां यः शरण्यः**
**स्तोतुं त्वां मे न भवति गिरां विस्तरो तुष्टिकर्ता।**

एवं वाचा स्तुतिपरमुनिं संततं शान्तमूर्तिम्
पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥४॥

અર્થ—મહારાજ આદીદેવની સ્તુતિ કરે છે કે હે દેવ! તમે ગુણુના સમુહથી યુક્ત છો, મારા જેવ.ને શરણુ લેવા યોગ્ય છો. જે શબ્દોથી તમને સ્તુતિ કરૂં તેવી તમને પ્રસન્ન કરનારો વાણીનો વિસ્તાર મારી પાસે નથી. આ પ્રમાણેના શબ્દોથી સ્તુતિકર્તાને સદાય શાન્તમુર્તિ એવા વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું. ॥૪॥

चक्षे किंचित्तदपि भवते श्चान्तरान् दोषराशीन्
भक्तुं युक्तिं मम दिशतु भो मुक्तिमार्गान्तरायान् ।
ध्यानाभ्यासोऽस्तु सततमिति प्रार्थयन्ते तदानीम्
पन्यासं हिम्मतविमलना मान मार्यं नमामि ॥५॥

અર્થ—મને બોલતાં આવડતું નથી, છતાં પણ એટલું તો કહીશ કે મુક્તિ માર્ગના અન્તરાય રૂપ અન્તઃકરણુમાં રહેનાર દોષના સમુહને ભાંગવાની યુક્તિ મને આપો. મને તમારા ધ્યાનનો સદાયને માટે અભ્યાસ થાવો, તેવી પ્રાર્થનાને કરતા વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું.

नाभेय त्वं भवसि जनता धर्ममार्ग प्रदाता
हित्वा दोषान् झटिति मनुजा योग्यतां चालभन्ते ।
ध्याने कुर्यां विमलचरितं ते सदेत्यर्थयन्तम्
पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥६॥

અર્થ—હે નાભીરાજાના પુત્ર તમે જનતાને ધર્મ માર્ગના આપનાર છો. જનો જલદી દોષ તજીને મોક્ષની યોગ્યતાને મેળવે છે, તે ધ્યાનને વિશે તમારા નિર્મલ ચારિત્રને સદાય ધારૂં. આ પ્રમાણે વિનંતિ કરતા વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું. ॥૬॥

दीक्षां लात्वा मनसि महतीं योग्यतां मन्यमानं
सूत्राणां च प्रवचनकृतिं मेधया धारयन्तम् ।
त्यक्त्वा स्वेच्छां स्वगुरुवचने वर्तमानं दयालुम्
पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥७॥

અર્થ—તે શત્રુંજય તીર્થમાં વડી દિક્ષા લઇને પોતાની યોગ્યતાને માનતા, સૂત્રોના પ્રવચનને પોતાની બુદ્ધિ વડે ગુરૂની પાસેથી ધારતા, પોતાની ઇચ્છા માત્રને તજીને ગુરૂના વચનમાં વર્તતા દયાળુ ને, નામ વડે વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું. ॥૭॥

**कर्त्तुं कर्माष्टक निरसनं साधनं मुक्तिलक्ष्म्याः**
**तीर्थे यात्रा स नवनवतिं प्रेमपूर्वं व्यधत्त ।**
**नैतत्तुल्यं तप इति मनोऽभीष्टदं भावयन्तम्**
**पन्यासं हिम्मतविमलनामानमार्यं नमामि ॥८॥**

અર્થ—મુક્તિ રૂપી લક્ષ્મીનું સાધન રૂપને અષ્ટ કર્મને નાશ કરવા માટે, તે શત્રુંજય તીર્થની ૧૩ વખત નવાણું યાત્રા પ્રેમ પૂર્વક જેમણે કરી છે. તે યાત્રા તુલ્ય મનને ઈચ્છિત આપનાર બીજું તપ કોઇ નથી. આ પ્રમાણે ભાવનાને કરતા વિમલગચ્છના અધિપતિ મહારાજશ્રી હિંમતવિમલજીને હું પ્રણામ કરૂં છું.

# मोक्ष पाने के उपाय

**ले. जैन भिक्षु भद्रानंद**

जों लोंक कर्मो से विमुक्त होना चाहते है अर्थात् कर्मपटलसे आवृत अपने परमात्म भाव को प्रकट करना चाहते हैं उनके लिये तीन साधनों की आवश्यकता है । श्रद्धा, ज्ञान और क्रिया इसीको जैन शास्त्रों में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र कहा है । कहीं कही ज्ञान और क्रिया, इन दो को ही मोक्षका साधन कहा है कारण दर्शन को ज्ञान स्वरूप–ज्ञान का विशेष–समझ कर उससे जुदा नही माना है किन्तु यह प्रश्न होता है कि वैदिक दर्शनों में कर्म, ज्ञान, योग और भक्ति इन चारों को मोक्ष का साधन माना है फिर जैन दर्शन में तीन या दो ही साधन क्यों माने गये ? इसका समाधान इस प्रकार है कि जैन दर्शन में जिस सम्यक् चारित्रको सम्यक् क्रिया कहा है उसमें कर्म और योग दोनों मार्गो का समावेश हो जाता है क्यों कि सम्यक् चारित्र में मनोनिग्रह, इन्द्रिय–जय, चित्त-शुद्धि, समभाव और उनके लिये किये जानेवाले उपायों का समावेश होता है । मनो-निग्रह, इन्द्रियजय आदि सात्विक यज्ञ ही कर्ममार्ग है और चित्त–शुद्धि तथा उसके लिये कीजानेवाली सत्प्रवृति ही योग मार्ग है । इस तरह कर्ममार्ग और योग मार्गका मिश्रण ही सम्यक्चारित्र है । सम्यग्दर्शन ही भक्तिमार्ग है, क्यों कि भक्ति में श्रद्धा का अंश प्रधान है और सम्यग्दर्शन भी श्रद्धा रूप ही है । सम्यग्ज्ञान ही ज्ञान मार्ग है । इस प्रकार जैन दर्शन में बतलाये हुये मोक्ष के तीन साधन अन्य दर्शनों के सब साधनो का समुच्चय हैं । किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये उपरोक्त–श्रद्धा, ज्ञान और क्रिया । इन तीन बातों की आवश्यकता होती है । इन तीनों का सामान्य विवेचन करके प्रथम सम्यग्द-र्शन (श्रद्धा)का विशेष विवेचन किया जायगा । श्रद्धा का अर्थ स्वपरआत्महितकारक सत्य विषयपर विवेक पूर्वक दृढ़ विश्वास है । हेयज्ञेयोपादेय रूप वस्तु को यथार्थ जानना ज्ञान है

और तदनुसार आचरण करना चारित्र है। प्रत्येक विपत्तिसे छूटने के लिये इन तीनोंकी जरूरत (आवश्यकता) है जैसे कोई बीमार आदमी बीमारीसे छूटना चाहता है तो उसे इस बातका दृढ़ विश्वास अवश्य होना चाहिये कि मुझे बीमारी है और बीमारी से छूटा जा सकता है इसके बाद निदान और चिकित्साका ज्ञान होना चाहिये। इसके बाद आचरण होना चाहिये। तब बीमारी दूर होगी। इन तीनों में से एक की भी कमी होगी तो वह निरोगी न हो पायगा। सुखके लिये भी इन तीनों बातों की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त तीन साधन आत्मा के अनंत गुणों में ये तीन गुण मुख्य है ये आत्माके ही स्वरूप है इनमे प्रदेश-भेद नहीं है, सिर्फ गुण-गुणी की अपेक्षा ये न्यारे न्यारे कहलाते हैं। जैसे समुद्र वायुके वेगसे उठी हुई लहरों की अपेक्षा अनेक रूप दिखाई देता है परन्तु उन लहरों की और समुद्रके बीच प्रदेशों की अपेक्षा कुछ भी अन्तर नही रहता उसी प्रकार आत्मा और सम्यग्दर्शनादि में प्रदेशों की अपेक्षा कुछ भी अन्तर नही रहता। वस्तुदृष्टि से जिस तरह अनेक लहरें समुद्ररूपही हैं उसी तरह सम्यग्दर्शनादि भी आत्मरूपही हैं। 'जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमिहोच्यते' इस नियमके अनुसार आत्मगुणों में सर्व-श्रेष्ठ होने के कारण उक्त तीन गुण ही 'रत्नत्रय' कहलाते हैं। इस तरह जैन समाज में रत्नत्रय का अर्थ सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र प्रचलित है। जिनमें प्रथम सम्यग् दर्शनका विशेष स्वरूप लिखा जाता है। कि अनादिकाल से इस आत्मा का परपदार्थों के साथ सम्बन्ध हो रहा है, जिससे वह अपने स्वरूप को भूल कर पर-पदार्थों को अपना समझ रहा है कभी यह शरीर को अपना समझता है और कभी कुछ विवेकबुद्धि जाग्रत होती है तो शरीर को पृथक् पदार्थ मान कर भी कर्म के उदय से प्राप्त होने वाले सुख-दुख को अपना समझता है जिससे यह आत्मा अत्यन्त दुखी होता है। मैं सुखी हूँ, दुःखी हूँ, निर्धन हूँ, धनाढ्य हूँ, सबल हूँ, निर्बल हूँ ये मेरे सगे सबंधी हैं इत्यादि विकल्प जाल से उलझा हुआ यह जीव अपने आपको शुद्ध स्वरूप को भूल जाता है। जीव की इस अवस्थाको 'मिथ्यादर्शन' कहते हैं। मिथ्यादर्शन वह अन्धकार है जिसमें यह आत्मा अपने आपको नही पहिचान सकता. उदाहरणार्थ एक सिंह का बच्चा छुटपन से सियारों के बीच पला था। जिससे वह अपने आपको भी सियार समझने लगा था। जब कभी गजराज सामने आता तो वह भी अन्य सियारों की तरह पीछे भाग जाता था एक दिन वह पानी पीने के लिये नदी के तीर पर गया। ज्यों ही उसने पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखा त्यों ही वह अपने आपको सियारों से भिन्न अनुभव करने लगा। वह उसी समय सियारों की संगति छोड कर सिंहो में जा मिला। अब वह गजराज को देख कर पीछे नहीं हटता किन्तु झपट कर उसके मस्तक पर बैठता है। इसी तरह जबतक यह आत्मा-मिथ्यादर्शनरूप

अंधकार से आवृत हो अपने आपको भूला रहता है तब तक मिथ्या–दृष्टि कहलाता है और जिसने अपने स्वरुप को पहिचाना ही नहीं वह उसे प्राप्त करने का प्रयत्न ही क्यों करेगा ? परन्तु जब विवेक बुद्धिके जागृत होने पर आत्माको आत्मरूप और परको पररूप समझने लगता है तब सम्यग्दृष्टि कहलाता है उसके इस भेद विज्ञान और तद्रूप–श्रद्धानको ही 'सम्यग्दर्शन' कहते हैं इस भेद विज्ञान और तद्रूप श्रद्धानसे ही जीव मोक्ष प्राप्त करने के लिये समर्थ होते हैं। ठीक ही आचार्य श्रीमद् अमृतचन्द्रजीने कहा है कि—

**भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धा ये किल केचन ।**
**तस्यैवाभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन ॥**

अर्थात्–अभी तक जितने सिद्ध हो सके हैं वे एक भेद–विज्ञान के द्वारा ही हुए हैं और अभी तक जो संसार में बद्ध हैं–कर्म कारागारमें परतन्त्र हैं वे सिर्फ उसी भेदविज्ञान के अभाव के फलस्वरूप हैं। इस प्रकार सम्यग्दर्शन का मुख्य लक्षण स्वपरको भेदरूप श्रद्धान करना हैं। यहां सम्यक् शब्द का अर्थ सच्चा और दर्शन का अर्थ विश्वास–श्रद्धान होता है। जीवात्मा को अपने सच्चे स्वरूपका ज्ञान प्राप्त करनेके लिए सबसे पहले एक-लक्ष्य की आवश्यकता है, फिर शुद्ध स्वरूपको प्राप्त करने के उपायों का जानना आवश्यक है और इसके बाद आवश्यकता है कि जाने हुए उपायों को कार्य रूप में परिणत करनेकी। जाने हुए उपायों को कार्य रूप में परिणत करने वाले पुरुष भी उसके उस काम में सहायक होते है। उपरोक्त बातों को स्मरण में रखकर ही जैन शास्त्रों में सम्यग्दर्शन का दूसरा लक्षण यह बतलाया है कि, '—

अपूर्ण

---

# "પધારો પર્વાધિરાજ"

## ગદ્યકાવ્ય

**"પધારો પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વ !"**

આરાધ્ય પર્વને વધાવતી વદે છે, ભાવમયી શ્રાવિકાઓ અને ભાવભર્યા શ્રાવક સમૂહ જાણે પ્રેમભાવના છાંટતા રસમય ને શીતલ પ્રશમ ઝરણાંના અભિ-સિંચનો. પર્વાધિરાજને ચરણે નમતી સુકોમળ લત્તાઓ સમી શ્રાવિકાઓ રાસની રમઝટ મચાવે છે, તે સમયે અમાવાસ્યાની અંધારી રાત્રિના અંધકારપટને ચીરતા રમણીય પ્રભા પ્રસારતો પ્રભાકર સમો પધારે છે, પર્વાધિરાજ શાંત સ્મિતવદને; ને ગજરાજ સમા અડગ પગલે. સન્માને છે સર્વે **"પધારો, પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વ !"**

દિશ દિશમાં એજ ધ્વનિ ને પ્રતિધ્વનિ, જાણે વિશ્વની વિશાળ કંદરા-માંથી ઉઠતો પ્રતિધ્વનિ, અસ્ખલિત ને મંગલભાવનામય,

**"પધારો, પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વ !"**

યવનિકા પર શોભતી ચલચિત્રની સતત ધારાવલિ સમી ભવિજનના હૃદય પ્રદેશે ગતિ ધારે છે શ્રીતીર્થંકરોના ભવ્યભાવની ચલચિત્રાવલિ, ઉપજે છે કોઇ અવર્ણનીય આનંદ, ધ્યાનસ્થ ભાવમય નયનો બને છે સ્થિર ભવ્યજનનાં, અને અંતરે વિરાજે છે શ્રીમહાવીર પ્રભુનો વિશ્વપ્રેમ-સુમંત્ર "સમભાવના", પ્રાણી માત્રમાં નિજાત્મભાવના, પાપના પૂંજ સમા કલહ કંકાસ વિરમી વિકસી ઉઠે છે ક્ષમાપના, જાણે વાદળ ચીરી પ્રકાશતો સહસ્રરશ્મિ, સમભાવનાની સહગામિની સમાન જીવદયા ભાવના "અહિંસા" મુખ્ય ધર્મ છે પ્રત્યેક જનનો, આત્મસ્વરૂપમાં રમણતા, પૌદ્‌ગલિક પદાર્થોમાં વૈરાગ્યભાવ, ને પ્રાણીમાત્રમાં સમભાવ એ છે સાચા સાધકનાં શસ્ત્રો; યથા બ્રહ્મચર્ય છે એક મહાન શસ્ત્ર સાચા બ્રહ્મચારીનું તપશ્ચર્યા, મનઃસંયમ ને પરસ્પરની સાચી ક્ષમાપના એ મહામુલો મંત્ર બીજો, જિનેશ્વરોનાં પવિત્ર ચરિત્રોનું શ્રવણ એ છે પુણ્યનું પવિત્ર સાધન, આદરો પૂજન પુણ્યદાયી પર્વાધિરાજનું, પ્રાપ્ત હો અનંત સિદ્ધિઓ, સર્વનું મૂળ છે વિનય, વિનયથી પ્રાપ્ત થાય સુશ્રૂષા, સુશ્રષાથી સંપ્રાપ્તિ શ્રુતજ્ઞાનની, શ્રુતજ્ઞાનથી સંસારના સર્વ ભાવની ઇચ્છા શમાવનારી વિરતિ, વિરતિથી પ્રગટે આશ્રવનિરોધ, આશ્રવનિરોધથી સંવર, સંવરથી તપસામર્થ્ય, તપસામર્થ્યથી નિર્જરાપ્રાપ્તિ, નિર્જરાપ્રાપ્તિથી ક્રિયા નિવૃત્તિ, ક્રિયાનિવૃત્તિથી અયોગીપણું, યોગનિરોધથી ભવપરંપરાનો સર્વથા વિનાશ અને તેનાથી મોક્ષપ્રાપ્તિ.

જીવન તો વ્યતીત થાય છે જલપ્રવાહ સમું, વિતેલી પળો નથી પ્રાપ્ત થતી પુનઃપુનઃ, આયુષ્ય તો જાય ને પ્રતિ વર્ષે પધારે પર્વાધિરાજ, છતાં આખાયે જીવનમાં પુણ્યબળે પ્રાપ્ત થાય ધન્ય ક્ષણ અને ત્યારે થાય પૂજન વિધિપૂરસર તો સાર્થક થાય સમસ્ત જીંદગી, મંગલભાવમય પર્વાધિરાજનાં અમરકીર્તિવંતાં ગાન ગુંથાયાં છે કલ્પવૃક્ષ સમા કલ્પસૂત્રમાં, તેનું વિધિપૂર્વક શ્રવણને મનન એટલે જીવન ધન્ય કરવા માટેનું અમૂલ્ય પૂણ્ય.

ગૃહે ગૃહે મંગલભાવે ગીત ને મહોત્વ થાઓ ને સર્વ કો આવકારદાયક ઉચ્ચારણ ઉચ્ચરો કે,

**"પધારો પર્વાધિરાજ પર્યુષણા પર્વ !"**

લે. મુનિશ્રી હેમેન્દ્રસાગરજી

# રાધનપુરમાં બનેલ અનિચ્છનીય બનાવ માટે વિચારણા કરવા સમગ્ર મહાજનને વિજ્ઞપ્તિ પત્ર.

રાધનપુરમાં તા. ૭-૮-૪૧ ના ચોથા પહોરમાં જે ન ઇચ્છવા યોગ પ્રસંગ બની ગયેલ તેની જેમ લોકોમાં જાણ થતી ગઇ તેમ તેમ લોકોની લાગણી દુઃખાતા તેના પડઘા રૂપે તા. ૮-૮-૪૧ નાં વ્યાખ્યાન પ્રસંગે તે બનાવની વ્યથા થતા સમૂહના હૃદય ઉપર આઘાત લાગ્યો, જેના પરિણામે આ બાબત મહાજન ભેગુ કરી નિર્ણય કરવો જોઈએ તેમ લોકોના મનમાં આવતા વ્યાખ્યાનની સમાપ્તિ પછી આસરે સો એક વ્યક્તિઓ જ્યાં હમેશા મહાજન એકત્ર થાય છે ત્યાં (તંબોળી શેરીની ધર્મશાળા) ગયા, અને મહાજન એકઠુ કરાવવાની વિચારણા કરી તેઓમાંથી નવેક જણાનું ડેપ્યુટેશન નગરશેઠના મકાને જઇ તેમને કહ્યું કે સદર બનાવ માટે મહાજન ભેગુ કરવાની અમારી સૂચના છે. નગરશેઠે પ્રત્યુત્તરમાં ચોખ્ખુ સુણાવી દીધુ કે **"તમારે મહાજન ભેગુ કરવુ હોય તો ભલે કરો, પણ હું આવીશ નહિ."** એટલે ડેપ્યુટેશને કહ્યું કે તમારા વિના મહાજન ભેગુ કરી શકાયજ નહિ, માટે તમારે આવવુંજ પડશે, આમ અત્યાગ્રહ કરવા છતાં પણ તેઓએ સંભળાવ્યું કે **"મને તોફાનની વધારે ધાસ્તી હોવાથી હું ભેગુ નહિ કરી શકું, પરંતુ તમોને સંતોષ થાય તેવું હું કરી આપીશ."** તેથી ડેપ્યુટેશન આશાભેર વેરાઇ ગયું, ત્યારથી તે તા. ૧૭-૮-૪૧ એટલે કે દશ દિવસ સુધી આ બાબત કાંઈ પણ હિલચાલ થયેલ ન હોવાથી આ નીચે મુજબ એક પત્ર નગરશેઠ તરફ "સમગ્ર મહાજનને વિજ્ઞપ્તિ પત્ર" સાથે મોકલી મહાજન એકત્ર કરી વિચારણા કરવા વિનવણી કરાયેલ છે.

**વારાહિ** તા. ૧૭-૮-૧૯૪૧

શ્રી માનનીય શ્રેષ્ઠીવર્ય **પન્નાલાલભાઇ અરિમર્દનભાઈ** નગરશેઠ આદિ સમગ્ર મહાજન સમુદાય.

વિજ્ઞપ્તિ સહ નિવેદન કે આ સાથે "સમગ્ર મહાજનને વિજ્ઞપ્તિ પત્ર" એ હેડીંગ નીચેનો પત્ર પાઠવેલ છે. તે પત્ર મહાજનના આગેવાન સભ્યોને અને સમગ્ર મહાજનને એકત્ર કરી વંચાવવા અને મહેરબાની કરી મહાજન સમુદાયમાં સદર હકીકત વિચારણા માટે રજુ કરી ભવિષ્યમાં આવા કડવા પ્રસંગો ન બને તે માટે યોગ્ય કરવા આપ શ્રીમાન્ વ્યવસ્થા કરવા મહેરબાની કરશોજી.

તા. ૧૭-૮-૪૧, રવિવાર. લી:—

**લખમીચંદ પ્રેમચંદ શાહ.**

મહાજનના વિનીમય સભ્ય અને આગેવાન

નોટ આ પત્ર સમગ્ર મહાજન પ્રત્યે હોઈ જાહેર જેવો હોવાથી તેનો પ્રકાશન કરવાનો અમારો હક્ક અખંડ રહે છે, જેની નોંધ લેશોજી.

# સમગ્ર મહાજનને વિજ્ઞપ્તિ પત્ર

સ્વસ્તી શ્રી પાર્શ્વજિન પ્રણુમ્ય શ્રી રાધનપુરનગરે શ્રીમાન્ શ્રેષ્ટીવર્ય નગરશેઠ પનાલાલ અરિમર્દનલાલ, મસાલીયા સીરચંદભાઇ સાંકળચંદભાઈ, મસાલીયા ખોડીલાલ સોભાગચંદ, મસાલીયા શીવલાલભાઇ મનછાચંદ, મસાલીયા આણંદજીભાઇ સરૂપચંદ, મસાલીયા જાદવજીભાઇ પાછાચંદ, ભણુશાળી કશળચંદ વછરાજભાઇ, દોસી હકમચંદ કશળચંદ, વોરા સરૂપચંદ ડામરસીભાઇ, શેઠ ધરમચંદ ઘેલચંદ, પારેખ મોહનલાલ ટોકરસીભાઇ, ગોટા કલ્યાણજી દેવરાજભાઇ, કોરડીઆ મનરૂપલાલ મનછાચંદ, શેઠ પુનમચંદ માણેકચંદ, શેઠ દેવકરણુ સંગજીભાઇ, શેઠ બકોરદાસ ઉજમશીભાઇ, શા. મોતીલાલ મુળજીભાઇ, વોરા ભુદરદાસ પોપટલાલ, વકીલ ભુદરદાસ વછરાજ, પારેખ સીરચંદ નાનચંદ, કોઠારી ભવાનજી વલમજી, શેઠ બાદરચંદ નરસંગ, શેઠ પ્રેમચંદ જેઠાભાઈ, શેઠ બાદરચંદ સાંકળચંદ, શેઠ પરસોતમદાસ નીચાલચંદ, દોસી મનસુખ ભાયચંદ, તેલી છોટમલાલ ચતુરભાઇ, કોઠારી લેરચંદ બોઘાભાઇ, પટવા સરૂપચંદ વાલજી, મોદી મનછાચંદ સાંકળચંદ, શેઠ સામજી પાનાચંદ, લેરી ગેલચંદ અનોપચંદ, વોરા કેવળદાસ ઉજમસી, મસાલીયા નીયાલચંદ સાંકળચંદ, શેઠ સીરચંદ નાનચંદ, કોરડીઆ જીવતલાલ પ્રતાપસીભાઇ, કોઠારી ગીરધરલાલ ત્રીકમલાલ, મોરખીયા કાન્તિલાલ ઇશ્વરદાસ, મસાલીયા જમનાલાલ વમળસી, વકીલ પ્રભુલાલ મનછાચંદ, ધામી નેમચંદ ખેગારસીભાઈ, શેઠ જેસીંગલાલ ચુનીલાલ, મસાલીયા દામોદરદાસ કેશરીચંદ, કોઠારી વાડીલાલ ઇશ્વરદાસ, કોઠારી નરોત્તમદાસ કાળીદાસ આદિ સમગ્ર મહાજન.

વિનય પૂર્વક નિવેદન કે તા. ૭-૮-૪૨ સાંજના પાંચ આસપાસના સમયે સાગરના ઉપાશ્રયે એક ન ઇચ્છવા યોગ્ય પ્રસંગ બની ગયેલ તે એ છે કે નગરશેઠ તેમના ભત્રિજા શાન્તિલાલને સાથે લઈ ઉપાશ્રયે ગયેલ, જ્યાં આચાર્યદેવ શ્રી લાવણ્યસૂરિજી મહારાજશ્રી સાથે નગરશેઠ વાર્તાલાપ કરતાં હતાં, તે સમયે વચમાં મી. શાન્તિલાલે આવેશયુક્ત ભાષામાં ઘણાજ કડક શબ્દો અપમાનજનક રીતે બોલતા શિષ્યવર્ગમાંથી અમૂકે સુચવ્યું કે ગુરૂદેવ સાથે મર્યાદિત ભાષામાં અને શાન્તિપૂર્વક વાર્તાલાપ કરો, આ કહેતાની સાથે વધુ ગરમ બની મર્યાદા મુકી મરજીમાં આવે તેવા કઠોર શબ્દોમાં શાન્તિલાલ બોલતા હોવાથી તેમને નીચે જવાનું કહેતા સાથે નગરશેઠ પણ ગયા. આ રીતે બનાવ બનેલ હોવા છતાં નગરશેઠે પ્રચાર કર્યો કે અમો ઉપાશ્રયે ગયેલ, ત્યાં શાન્તિલાલ કાંઇક કહેતા મોટા મહારાજ અને શિષ્યવર્ગ ગરમ થઈ ગયા. જો હું શાન્તિલાલને હાથ પકડી નીચે ન ઉતારૂં તો જરૂર શિષ્યો તેને મારી બેસતે, આવી રીતે ભત્રિજાને બચાવવા અને ગુરૂદેવને વગોવવા નગરશેઠે ખોટો પ્રચાર કરેલ છે.

ઉપરોકત રીતે ગુરૂદેવ પ્રત્યે અપમાનજનક બોલવાનું મી. શાન્તિલાલનું પગલુ, અને ખોટો પ્રચાર કરી મુનિવર્યને વગોવવાનું નગરશેઠનું પગલુ કોઇ પણ રીતે પસંદ કરવા જેવુ નથી, તેટલુજ નહિ પણ સમુહના સંગઠ્ઠનથી આવા અનિચ્છનીય પ્રસંગ માટે જો યોગ્ય વિચારણા કરવામાં નહિ આવે તો રાધન-પુરના સમગ્ર જૈનોનું આ બનાવને સમર્થન છે, એમ બહારનું જૈન જગત માનશે. તેથી મ્હારી આપ આગેવાનો આદિ સમગ્ર મહાજનને વિનીમય વિજ્ઞપ્તિ છે કે આ પ્રસંગ માટે મહાજન એકઠું કરી તેમાં મહારો આ વિજ્ઞપ્તિ પત્ર રજુ કરી બનેલ બનાવના સાથે સંબધ કર્તા વ્યકિતઓથી હકીકત જાણી ભવિ-ષ્યમાં આવી રીતે પૂજ્ય મુનિગણની અવગણના કે આશાતના ન થાય તે માટે મહાજન યોગ્ય નિર્ણય કરવા મહેરબાની કરશોજી. એજ વિજ્ઞપ્તિ.

વારાહિ તા.
૧૭-૮-૧૯૪૧,
રવિવાર.

લી:—
**લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ શાહ.**
મહાજનના વિનીમય સભ્ય અને આગેવાન.

ઉપરોક્ત પત્ર તા. ૧૮-૭-૪૧ ના ત્રીજા પહોરમાં નગરશેઠને એક્ષપ્રેસ ડીલીવરીથી ટપાલ દ્વારા મળ્યો, કે તરતજ તેની અસર તેમના ઉપર થઇ અને શાન્તિલાલને ખૂબ ખૂબ સમજાવી બે આગેવાન વ્યક્તિઓ સાથે તેજ દિનના સાંજે તેમને આચાર્ય દેવ પાસે મૂકી, તા. ૭-૮-૪૧ ના સાંજના બનેલ બનાવ માટે વંદનાપૂર્વક માફી યાચી અને ગુરૂદેવે ક્ષમાપના આપી. પરંતુ તે પ્રશ્ન સંઘે ઉપાડેલ હોવાથી આ માફીની જાહેરાત ચતુર્વિધ સંગ સમક્ષ વ્યાખ્યાનમાં કરાવવાનું રાખેલ, તે મુજબ તા. ૧૯-૭-૪૧ (અઠ્ઠાઈધર) ના વ્યાખ્યાન સમયે નગરશેઠે ચતુર્વિધ સંઘ બરાબર સાંભળી અને સમજી શકે તેથી સંઘ સમક્ષ શાન્તિલાલની માફી બાબત જાહેર કરવાની મુનિશ્રી વિકાશવિજયજીને વિજ્ઞપ્તિ કરતાં તેમણે જણાવ્યું કે તા. ૧૮મીના સાંજના શાન્તિલાલ જીવનલાલ મસાલિયા બે ગૃહસ્થો સાથે આચાર્ય મહારાજ પાસે આવી, વંદનાપૂર્વક પોતાનો અપરાધ ખમાવી માફી યાચી હતી, આચાર્ય મહારાજે શાન્તિલાલના અપરાધની ક્ષમા આપી હતી. બાદ ગુરૂદેવે કહ્યું કે ઉપસર્ગો સહન કરવા એ અમારો સાધુ ધર્મ છે, પણ આ બનાવથી સમસ્ત સંઘને દુઃખ ઉપજ્યુ હતું, અને સંઘમાં ખટરાગ જાગ્યો હતો, પરંતુ આવા સર્વોત્તમ ધાર્મિક પર્વમાં સંઘમાં ખટરાગ ન રહે, અને એક ચિત્તે ધાર્મિક પર્વ સકળ સંઘ નીર્વિઘ્ને ઉજવે, એવી આશા પ્રદર્શિત કરી હતી.

જો કે પત્રમાં લખેલ સૂચના મુજબ તેની વિધિ થયેલ નથી પરંતુ પત્ર મલતાની સાથે જ પર્યૂષણ પર્વના મંડાણ થયેલ હોવાથી આ વિધિ કરવામાં વિલંબ થાય એ સ્વાભાવિક છે. જેથી આશા રાખીએ છીએ કે આ પત્ર ઉપર હવે પછી મહાજન એકત્ર કરી નગરશેઠ આદિ મહાજનના આગેવાનો વિચારણા કરાવશે એજ અભ્યર્થના.

# ચાતુર્માસ નિર્ણય.

જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયેન્દ્રસૂરિજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, શીવપુરી, ગ્વાલિયર.
જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયસૌભાગ્યસૂરિજી આદિ, જામનગરવાળી ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયકુસુમસૂરિજી આદિ, નાગોરીશાળાનો ઉપાશ્રય, અમદાવાદ.
જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયલાભસૂરિજી આદિ ૨, વડોદરા.
જૈનાચાર્ય શ્રીજિનહરિસાગરસૂરિજી આદિ ૬, સંવેગીઉપાશ્રય, મોકલસર,મારવાડ.
જૈનાચાર્ય શ્રીધનચંદ્રસૂરિજી આદિ, જસકોરની ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
ઉપાધ્યાય શ્રીકલ્યાણવિજયજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, ગોળ, મારવાડ.
ઉપાધ્યાય શ્રીમણીસાગરજી આદિ ૨. સંવેગી ઉપાશ્રય, જયપુર.
ઉપાધ્યાય શ્રીમતિસાગરજી આદિ ૩, દાદા સાહેબની વાડી, પાલીતાણા.
ઉપાધ્યાય શ્રીલબ્ધિમુનિજી આદિ, મહાવીર સ્વામીનુ મંદિર પાયધુનિ, મુંબઈ
ઉપાધ્યાય શ્રીરવિચંદ્રજી આદિ, પાયચંદગચ્છનો ઉપાશ્રય, તલવાસણા, કચ્છ.
પન્યાસ શ્રીઅમૃતવિજયજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, રાણી, મારવાડ.
પન્યાસ શ્રીલલિતવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, વડનગર.
પન્યાસ શ્રીમતીન્દ્રવિજયજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, સુમેરપુર, મારવાડ.
પન્યાસ શ્રીજશવિજયજી આદિ, તપાગચ્છનો ઉપાશ્રય અહમદનગર, ખાનદેશ.
પન્યાસ શ્રીરવિવિમળજી આદિ ૨, જૈન સોસાયટી; અમદાવાદ.
પન્યાસ શ્રીચતુરવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ગંભીરા ગુજરાત.
પન્યાસ શ્રીહર્ષવિજયજી આદિ, તપાગચ્છનો ઉપાશ્રય, થરાદ.
પન્યાસ શ્રીરમણિકવિજયજી આદિ, વંડામાં શાન્તિભૂવન, પાલીતાણા.
પન્યાસ શ્રીઅવદાતવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ભાવનગર.
પન્યાસ શ્રીભૂવનવિજયજી આદિ, દાદા સાહેબની વાડી, ભાવનગર,
પન્યાસ શ્રીતિલકવિજયજી આદિ ૭, જૈન ઉપાશ્રય, ભાભેર.
મુનિશ્રી ન્યાયવિજયજી આદિ ૨, નાગજી ભુદરની પોળનો ઉપાશ્રય, અમદાવાદ.
મુનિશ્રી રવિવિજયજી આદિ ૩, તપાગચ્છ ઉપાશ્રય, અમરેલી.
મુનિશ્રી મતિસાગરજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ઓતુર, પુના.
મુનિશ્રી વિનયવિજયજી આદિ, રણછોડલાઈન, જૈન મંદિર ઉપાશ્રય, કરાંચી, સિંધ.
મુનિશ્રી પ્રિયંકરવિજયજી આદિ જૈન ચૈત્ય પાસેનો ઉપાશ્રય, હાલા, સિંધ.
મુનિશ્રી તિલકવિજયજી, આદિ, તપાગચ્છ ઉપાશ્રય, કોલ્હાપુર.
મુનિશ્રી મેરૂવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, કોબરથર, અમદાવાદ.
મુનિશ્રી ભક્તિવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ખેડા.
મુનિશ્રી કનકવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ખેડબ્રહ્મા, પ્રાંતિજ.
મુનિશ્રી દાનવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ખાચરોડ, માળવા.

મુનિશ્રી લાવણ્યવિજયજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, ગઢસીવાણા મારવાડ.
મુનિશ્રી ભરતવિજયજી આદિ ૨, તપાગચ્છ ઉપાશ્રય, ચોટીલા.
મુનિશ્રી ચિદાનંદવિજયજી આદિ ૨, તપાગચ્છ ઉપાશ્રય, જોરાવરનગર.
મુનિશ્રી મનહરવિજયજી આદિ ૩, હઠીભાઈની ધર્મશાળા, જુનાગઢ.
મુનિશ્રી આણંદસાગરજી, (વીરપુત્ર) આદિ ૭, સંવેગીઉપાશ્રય, જોધપુર, મારવાડ.
મુનિશ્રી ન્યાયવિજયજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, થાંદલા, મારવાડ.
મુનિશ્રી અમરવિજયજી આદિ ૫, અમરચંદ જસરાજની ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી મણિવિજયજી આદિ ૨, મોતીકડીઆની ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી કંચનવિજયજી આદિ ૨, ઉજમબાઈની ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી જયવિજયજી આદિ, ચંપાનિવાસ, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી તપસ્વી પ્રેમસાગરજી આદિ, કલ્યાણભૂવન, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી દર્શનવિજયજી આદિ ૬, દાદા સાહેબની વાડી, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી કનકવિજયજી આદિ ૩, ખુશાલભૂવન, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી રવિવિજયજી આદિ ૨, ખુશાલભૂવન પાલીતાણા.
મુનિશ્રી સયંમસાગરજી આદિ ૩, કોટાવાળાની ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી ચન્દ્રવિજયજી આદિ, સાહિત્ય મંદિર, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી પ્રધાનવિજયજી આદિ, બાબુની ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી વિવેકસાગરજી આદિ, નરસીકેશવજી ધર્મશાળા, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી તિલોકચંદજી આદિ, નરસીનાથાની ધર્મશાળા પાલીતાણા
મુનિશ્રી રાયસાગરજી આદિ ૨, જિનદત્તસૂરિ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, પાલીતાણા.
મુનિશ્રી નવનિધસાગરજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, કોકણફલોધિ, મારવાડ.
મુનિશ્રી મંગળસાગરજી આદિ જૈન ઉપાશ્રય. બેઝવાડા, મદ્રાસ.
મુનિશ્રી જીતસાગરજી આદિ, સંવેગી ઉપાશ્રય, બાડમેર, મારવાડ.
મુનિશ્રી ભગવાનવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, ભાવનગર.
મુનિશ્રી અમૃતવિજયજી આદિ ૩, સંવેગી ઉપાશ્રય, ભૂતી, મારવાડ.
મુનિશ્રી પ્રભવિજયજી આદિ, તપાગચ્છ ઉપાશ્રય, ભુજ કચ્છ.
મુનિશ્રી હંસસાગરજી આદિ, બજારગેટના ચૈત્યનો ઉપાશ્રય, મુંબઈ.
મુનિશ્રી મુક્તિસાગરજી આદિ, જિન ચૈત્ય પાસેનો ઉપાશ્રય, મેરઠ, યુ. પી.
મુનિશ્રી સુમતિવિજયજી આદિ, અંબાલાલ પાનાચંદની ધર્મશાળા ખંભાત.
મુનિશ્રી દાનવિજયજી આદિ, તપાગચ્છનો ઉપાશ્રય, મહુવા.
મુનિશ્રી કેશરવિજયજી આદિ, તપાગચ્છનો ઉપાશ્રય, વાવ.
મુનિશ્રી કમળવિજયજી આદિ સંવેગી ઉપાશ્રય, લોપોદ, મારવાડ.
મુનિશ્રી દેવેન્દ્રવિજયજી આદિ, જૈન ઉપાશ્રય, સીનોર, ગુજરાત.
મુનિશ્રી ચારિત્રવિજયજી આદિ, ચારિત્રાશ્રમ, સોનગઢ.

[अपूर्ण]

# તપારાધના.

**સાદડી** જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્દવિજયનીતિસૂરીશ્વરજી મહારાજના ઉપદેશામૃત સિંચનથી, ઘણાજ આંડબર અને ભક્તિપૂર્વક સંઘ તરફથી અઠ્ઠાવીસ લબ્ધિ તપની આરાધના થતાં, તેની સંપૂર્ણતાના અંતે તપોત્સવ નિમિત્તે વરઘોડો, રાત્રિ જાગરણ, પરમાત્માની અંગરચના, અને પૂજા આદિ ઉલ્લાસપૂર્વક કરી ઉજવણી કરી હતી. ઉપરાંત સાદડીમાં કન્યાશાળાનો અભાવ હોવાથી તેની આવશ્યકતા પર ગુરૂદેવશ્રીએ ઉપદેશ કરતાં, અમુક વ્યક્તિઓએ પાંચ વર્ષ સુધીનું ખર્ચ આપવાની મહેચ્છા દર્શાવતા. શિક્ષિકાની શોધ ખોળ ચાલી રહેલ છે, જેની પ્રાપ્તિ થતાં શ્રાવિકાશાળાનો પ્રારંભ થશે. તદુપરાંત સાદડીમાં અમુક અંશે શ્રાવકગણમાં કુસુંપના બી રોપાયેલા હતા, તે ફાલીફૂલીને વૃક્ષ ન બને તે માટે મૂળમાંથી જ ઉખેડી નાખવા, આચાર્યદેવશ્રી પ્રયાસ કરી રહેલ છે. આ કાર્યમાં પરમાત્મા તેમને સફળતા અર્પે, અને સાદડીનો સંઘ કુસુંપથી નિર્મળ બને એવી અંતર વાંછના.

**તખતગઢ** જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્ હર્ષસૂરિજી મહારાજના સદુપદેશથી વર્દ્ધમાન તપની સંસ્થાને પોષણ નિમિત્તે શ્રાવકગણમાંથી રૂ. ૭૫૦૦થી વધુ ફાળો એકત્ર થએલ છે. તપારાધના સમય પ્રમાણે ઉત્સાહથી થયેલ છે, દરરોજ વ્યાખ્યાનનો લાભ જૈનજૈનેતરો મળી હજારેકનો સમુહ લે છે, ચારે માસની નોંધાયા મુજબ નિર્માણ થયેલ વ્યક્તિ તરફથી દરરોજ વ્યાખ્યાનમાં રૂપીઆ, શ્રીફળ સાથેની ગહુંલી અને પ્રભાવના થાય છે.

**બીયાવર** ઉપાધ્યાય શ્રીદયાવિજયજી મહારાજના ઉપદેશથી, સંઘની સૂત્ર વંચાવવાની ભાવના થતાં, ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રને પધરાવી, રાત્રિજાગરણ કરી, જ્ઞાનભક્તિ કર્યા બાદ બીજા દિવસે ઘણા જ આડંબરપૂર્વક વરઘોડો ચઢાવી, સૂત્ર વહોરાવવાની ઉછામણી બોલી, વિનયપૂર્વક ગુરૂદેવને સૂત્ર વહોરાવી વાચના શરૂ કરાવેલ છે, તેમજ ભાવનાધિકારે શ્રી પાર્શ્વનાર ચરિત્ર વંચાય છે. વ્યાખ્યાનનો જૈનજૈનેતરો મોટા સમુહમાં લાભ લે છે. તદુપરાંત શ્રાવકગણે ઉલ્લાસ અને ભક્તિપૂર્વક શ્રી અક્ષયનિધિ તપની શ્રાવણ વદિ ૪ થી આરાધનાનો પ્રારંભ કરેલ છે. લોકોમાં અદ્વિતીય ઉત્સાહનો વેગ વહી રહ્યો છે.

**રાધનપુર** જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયલાવણ્યસૂરીજી મહારાજશ્રીના આસિર્વાદ મેળવી મુનિશ્રી વિકાશવિજયજી ગણિવર્ય. મુનિશ્રી મહિમાપ્રભવિજયજી, સાધવી શ્રી મનોજ્ઞનાશ્રીજી, તથા ગુરૂદેવની સેવામાં રહેનાર કુંભાર ચિતુ, અને ભીલ માધા એમ પાચે અઠ્ઠાઈ તપની આરાધના કરી છે. અને આચાર્ય શ્રીવિજયભદ્રસુરીજી મહારાજના શિષ્ય પરિવારમાં મુનિશ્રી દોલતવિજયજી અને મુનિશ્રી પુંડરીક-

વિજયજી એ પર્યુષણ પહેલા સોળના તપની આરાધના કરવા ઉપરાંત શહેરમાં સમયાનુસાર નારીસમૂહમાં ભિન્નભિન્ન પ્રકારના તપોની આરાધના થયેલ છે. અને તેથી શ્રાવક ગણુમાં ઉલ્લાસ અને ઉમંગ સારો હોઇ ગુરૂદેવોની તપસ્થા નિમિત્તે અષ્ટાહનીકા મહોત્સવની ઉજવણી થયેલ છે. આચાર્યદેવે કારણવશાત શ્રાવણ વદિમાં વિહાર કરી વારાહિ જવાનુ નક્કી કરેલ તેથી વારાહિ સંઘે તાર અને પત્રદ્વારા પધારવા વિજ્ઞપ્તિ કરેલ પરંતુ હાલ તુરત તે વિહાર બંધ રહેલ છે. વ્યાખ્યાનનો અબાલ વૃદ્ધ આદિ મોટો સમૂહ લાભ ઉઠાવે છે. વળી થોડાક સમયમાં સંઘ સ્મસ્ત ગુરૂદેવ સાથે ચૈત્ય પરિપાટી કરવાનું શરૂ કરશે. આ રીતે રાધનપુર હાલ તો ઉત્સાહમય વાતાવરણમાં ગુંજી રહ્યું છે.

**प्रतापगढ** પન્યાસજી શ્રીકલ્યાણુવિજયજી મહારાજના દેશનામૃતથી, શ્રાવકગણુમાં ઉલ્લાસ આવતાં નવકાર મહામંત્રના તપની, અષાડ વદિ ૧૪ થી ઘણુા જ આડંબર સહિત ઉમંગ અને ઉત્સાહપૂર્વક આરાધના શરૂ થતાં, તેની સંપૂર્ણતાના અંતે, તપોત્સવ નિમિત્તે વરઘોડો, રાત્રિ જાગરણ, પરમાત્માની અંગરચના, અને પૂજાદિ ઉલ્લાસપૂર્વક કરી ઉજવણી કરી હતી. વ્યાખ્યાનમાં જૈનજૈનેતરોનો શ્રોતાગણુ મોટી સંખ્યામાં આવે છે. અને શહેરમાં ગુરૂદેવની પધરામણિથી આનંદોત્સવ ગર્જી રહ્યો છે.

**लुणावा.** મુનિશ્રી રવિવિજયજી, શ્રી હિમતવિજયજી આદિના ચાતુર્માસથી શ્રાવકગણુમાં ઉત્સાહ વધતા, વર્દ્ધમાન તપના પોષણુની ટીપમાં રૂ. ૭૦૦૦) આશરે થવા ઉપરાંત બાર માસના પોસહ કરનારાઓના ઉતરવારણા પણ નોંધાઈ જવા સાથે તપારાધના પણ સારી થઈ છે.

**सेवाडी.** મુનિશ્રી ભદ્રાનંદવિજયજી આદિના ચોમાસાથી, શ્રાવક સમૂદાયમાં ઉલ્લાસ વધતાં, સૂત્ર વાંચના શરૂ કરાવી, વ્યાખ્યાનનો જૈનજૈનેતર મહોટા સમુહમાં લાભ લે છે. વળી મુનિશ્રી બુદ્ધિવિજયજીએ ૨૫ ઉપવાસ અને સાધવી શ્રી કમળશ્રીજીએ માસખમણુના તપની આરાધના કરવાથી, તેના ઉલ્લાસમાં સંઘે વરકાણુાથી સંગીત મંડળી બોલાવી, ઘણુા જ ઠાઠમાઠથી અષ્ટાહ્નિકા મહોત્સવનો પ્રારંભ કરી, રાગ રાગણીથી મધુર વાજીંત્રોના નાદોથી પૂજા ભણાવવા સાથે, પ્રભુજીને ઉત્તમ પ્રકારની અંગરચના કરાવી છે. ઉપરાંત પંચરંગી તપની આરાધના શ્રાવક ગણે ઘણાજ મોટા સમૂહથી ઉત્સાહ અને ઉમંગપૂર્વક કરી હતી. વ્યાખ્યાનમાં હમેશા પ્રભાવના થાય છે.

**मोरवाडा** મુનિશ્રી અમરવિજયજી મહારાજના ચાતુર્માસથી શ્રાવક સમુહમાં ઉત્સાહ વધતા તપારાધનામાં એક સોળ, અગીઆર દશ અને ચાર અઠ્ઠાઈ થવા પામેલ છે. તપસ્યા મોટા ભાગે નારી સમૂહે કરેલ છે. આ તપસ્વીઓના લીધે ગામ આનંદોત્સવમાં ગરકાવ થઈ જવા સાથે તપ ઉજવણી નિમિત્તે, નૌકારસી, અષ્ટાહ્નિકા મહોત્સવ આદિ અનેક શુભ કાર્યો કરવામાં લયલીન થઈ ગયેલ છે.

# અનુયોગચાર્ય પન્યાસજી શ્રી ભાવવિજયજી ગણિવર્ય નિર્વાણ દિનની ઠેર ઠેર થયેલ ઉજવણી.

**શ્રાવણ શુકલ ચતુર્થીના મંગળ પ્રભાતે, જ્યાં જ્યાં ઉક્ત પૂજ્ય ગુરૂદેવશ્રીનો સમુદાય અને આજ્ઞાકિંત શ્રમણગણ હતા, ત્યાં આ ઉત્સવ દિનની ઉજવણી ઘણાજ ઉલ્લાસપૂર્વક થઈ રહી હતી.**

**સાદડી**માં જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી મહારાજના, **તખતગઢ** આચાર્યશ્રીવિજયહર્ષસૂરિજીના, **બીયાવર** ઉપાધ્યાયશ્રીદયાવિજયજીના, **જામનગર** પન્યાસ શ્રી માનવિજયજીના, **પ્રતાપગઢ** પન્યાસ શ્રી કલ્યાણવિજયજીના, **ઉજજન** પન્યાસ શ્રી મંગળવિજયજીના, **અમદાવાદ** મુનિશ્રી વિદ્યાવિજયજીના **લોદરા** મુનિશ્રી ભુવનવિજયજીના **સેવાડી** મુનિશ્રી ભદ્રાનંદવિજયજીના, **ખરેડી** મુનિશ્રી દેવેન્દ્રવિજયજીના, **લુણાવા** મુનિશ્રી રવિવિજયજીના, **માયલી પાલડી** મુનિશ્રી જયવિજયજીના, **પાલણપુર** મુનિશ્રી આણંદવિજયજી આદિના અધ્યક્ષ પણા નીચે સદર ગામોએ વ્યાખ્યાન સમયે મર્હુમના જીવન પૈકીના બોધદાયક આદરણીય પ્રસંગો દર્શાવી તેમની ઉંચ્ચ કોટીના ભાવને આદરવાનું સૂચન હરેક વકતાઓએ કરેલ હતું તેમજ તે દિને વ્યાખ્યાનમાં પ્રભાવના અને બપોરના દરેક શહેરના સ્થળ નજદિકના જિનચૈત્યે વાજિંત્રોના મધુર સ્વરોના નાદ સાથે રાગ રાગણીથી પંચ કલ્યાણકની પૂજા અને પરમાત્માને અતિ આલ્હાદજનક અંગરચના ભાવિક શ્રાવક ગણ તરફથી કરાવવા ઉપરાંત અમુક સ્થળોએ રાત્રિ જાગરણ કરીને સદર દિનની ઘણાજ ઉલ્લાસપૂર્વક ઉજવણી સ્થળે સ્થળે થઈ હતી.

# મહર્ષિ–ગણને વિજ્ઞપ્તિ.

માસિક આપશ્રીને નિયમિત મોકલવામાં આવે છે. તેના લવાજમના તપાગચ્છ પટ્ટાવળી સાથે ચાર પુસ્તકો ભેટના પોસ્ટેજ ચાર્જ સહિત રૂ. ૩–૬–૦નું વી. પી ભાદરવા સુદિ ૧૫ થી મોકલવાનું શરૂ કરવામાં આવશે, તો તે મળેથી સ્વીકારી લેશો. તેમજ જો આપની ગ્રાહક તરીકે રહેવાની અનિચ્છા હોય તો અંક મળેથી જણાવી દેવાનું ધ્યાનમાં રાખશો. **તંત્રી.**

મુદ્રકઃ-**હીરાલાલ દેવચંદ શાહ.** "શારદા મુદ્રણાલય." જુમામસ્જીદ સામે-**અમદાવાદ**
પ્રકાશકઃ-**ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ. "જૈનધર્મ વિકાસ"** ઓફિસ જૈનાચાર્યશ્રી વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી વાંચનાલય. ૫૬/૧ રીચીરોડ-**અમદાવાદ.**

## વાર્ષિક લવાજમ.] વિષય–દર્શન. [રૂપિયા, બે.

### ભાદરવા, વિ. સં. ૧૯૯૭.


| વિષય. | લેખક. | પૃષ્ઠ. |
|---|---|---|
| પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહોત્સવ. | મુનિશ્રી હેમેન્દ્રસાગરજી. | ૩૦૯ |
| **श्री आदिनाथ चरित्र पद्य.** | **जैनाचार्यश्रीजयसिंहसूरिजी** | ૩૧૧ |
| **श्री शीलकुलकम्** | **जैनाचार्यश्रीविजयपद्मसूरिजी.** | ૩૧૨ |
| **शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा.** | **पूज्य मु. श्री प्रमोदविजयजी. (पन्नालालजी)** | ૩૧૩ |
| શ્રી સિદ્ધચક્રની તાત્વિકભાવના. | જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસૂરિજી. | ૩૧૫ |
| ધર્મ્ય વિચાર. | ઉપાધ્યાય. શ્રી સિદ્ધિમુનિજી. | ૩૧૯ |
| કેટલીક મહત્વની બાબતો. | મણીલાલ ખુશાલચંદ પારેખ. | ૩૨૩ |
| પાર્શ્વનાથ પ્રભુ આરતી. | અમૃતલાલ ઉજમસી ગંધાર. | ૩૨૪ |
| " મૂર્તિપૂજાના વિરોધમાં " | મુનિશ્રી ન્યાયવિજયજી. | ૩૨૫ |
| **श्री शत्रुंजय–अष्टक.** | **प्रवर्त्तक श्री शान्तिविमलजी.** | ૩૨૭ |
| **मोक्षपाने के उपाय.** | **मुनिश्री भद्रानंदविजयजी (जैन भिक्षु)** | ૩૨૯ |
| " પધારો પર્વાધિરાજ !" | મુનિશ્રી હેમેન્દ્રસાગરજી. | ૩૩૧ |
| રાધનપુરના સમગ્ર મહાજનને વિજ્ઞપ્તિ પત્ર | લખમીચંદ પ્રેમચંદ શાહ. | ૩૩૩ |
| ચાતુર્માસ—નિર્ણય. | તંત્રી. | ૩૩૬ |
| તપારાધના. | તંત્રી. | ૩૩૮ |
| પં. ભાવવિજયજીના સ્વર્ગ–દિન ઉજવણી. | તંત્રી. | ૩૪૦ |


શુદિ ૧, શનિ, શ્રીવીરજન્મ ઉત્સવદિન
શુદિ ૨, રવિ, તેલાધર.
શુદિ ૪, મંગળ વાર્ષિકપર્વ સંવત્સરીદિન.
શુદિ ૯–૧૦ રવિ, શ્રી સુવિધિનાથ મોક્ષદિન.
શુદિ ૧૧, સોમ, શ્રી હીરસૂરીશ્વરજી સ્વર્ગદિન.

વદિ ૭, શનિ, રોહિણીદિન.
વદિ ૦)), રવિ, શ્રી નેમિનાથકેવલદિન.

**પંચાંગ.**

સુદિ ૯ ક્ષય
વદિ ૬ બે

| તિથિ | વાર | તારીખ |
|---|---|---|
| સુ૧ | શનિ | ૨૩ |
| ૨ | રવિ | ૨૪ |
| ૩ | સોમ | ૨૫ |
| ૪ | મંગળ | ૨૬ |
| ૫ | બુધ | ૨૭ |
| ૬ | ગુરૂ | ૨૮ |
| ૭ | શુક્ર | ૨૯ |
| ૮ | શનિ | ૩૦ |
| ૧૦ | રવિ | ૩૧ |
| ૧૧ | સોમ | *૧ |
| ૧૨ | મંગળ | ૨ |
| ૧૩ | બુધ | ૩ |
| ૧૪ | ગુરૂ | ૪ |
| ૧૫ | શુક્ર | ૫ |
| વ૧ | શનિ | ૬ |
| ૨ | રવિ | ૭ |
| ૩ | સોમ | ૮ |
| ૪ | મંગળ | ૯ |
| ૫ | બુધ | ૧૦ |
| ૬ | ગુરૂ | ૧૧ |
| ૬ | શુક્ર | ૧૨ |
| ૭ | શનિ | ૧૩ |
| ૮ | રવિ | ૧૪ |
| ૯ | સોમ | ૧૫ |
| ૧૦ | મંગળ | ૧૬ |
| ૧૧ | બુધ | ૧૭ |
| ૧૨ | ગુરૂ | ૧૮ |
| ૧૩ | શુક્ર | ૧૯ |
| ૧૪ | શનિ | ૨૦ |
| ૦)) | રવિ | ૨૧ |

*સપ્ટેમ્બર૨૦

## વાંચકોને !

માસિકના નમુનાનો અંક આપને મોકલવામાં આવે છે. આપશ્રીને અવલોકન કરતાં જો એ સંતોષ આપવામાં સફળ નીવડે તો આશા છે કે, વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના ( પોસ્ટેજ સાથે ) રૂા. ૨-૬-૦ મોકલી આપશ્રી માસિકના ગ્રાહક તરીકે નામ નોંધાવશો.

લવાજમ મોડામાં મોડા આવતી સુદિ ૧ સુધી મોકલી આપશો. કે જેથી વી. પી. થી મોકલતાં વધુ ખર્ચ ન થાય, છતાં જણાવશો તો વી. પી. કરવામાં આવશે.

ગામ પરગામ વિચરતા પૂજ્ય મુનિવરો માસિકનો પ્રચાર કરી, નવા વાંચન-રસિક ગ્રાહકો નોંધાવી, માસિકને પ્રોત્સાહન આપશે, એવી અમે આશા રાખીએ છીએ.

કોઇ પણ સામાજીક સંસ્થાઓ કે પૂજ્ય મુનિગણને અમો, મફત કે ઓછા દરથી માસિક આપી શકીએ તેમ નથી, એ સૂચન થાય.

નમુનાની નકલ મંગાવવાથી મોકલી આપવામાં આવશે. "તંત્રી"

## ગ્રાહકોને ખાસ લાભ

દર માસની સુદિ પંચમીએ નિયમિત પૃ. ૩૨ નું વાંચન. વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના રૂા. ૨-૬-૦ ( પોસ્ટેજ સાથે )થી પુરૂ પાડવા, ઉપરાંત આકર્ષક પુસ્તકો ભેટ આપવામાં આવશે.

માસિકના નવા થનાર ગ્રાહકને લવાજમ મોકલી આપવાથી (૧) આચાર્યશ્રી-વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી મહારાજનું જીવન ચરિત્ર (સંસ્કૃત) ક્રાઉન સોળ પેજી, પાકુ પુઠું પૃ. ૪૭૬ અગર પ્રશ્નોત્તર રત્નમાળા ( હીંદિ-ગુજરાતી ) ક્રાઉન સોળ પેજી, પૃ. ૧૯૦ એ બેમાંથી જે કોઇ એકની પસંદગી કરી ગ્રાહક જણાવશે તે, ઉપરાંત શ્રીય-શોવિજય જૈન પુસ્તકાલય, રાધનપુર તરફથી, (૨) રથયાત્રા મહોત્સવ. (૩) ચોવીસ જીનકલ્યાણક, (૪) સ્તવનાવલી, મળી એકંદર ચાર પુસ્તકો ભેટ આપવામાં આવશે.

"તંત્રી"

# તપાગચ્છ પટ્ટાવલી

## સાહિત્યરસિક જનતાને ખાસ તક

### ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ ધર્મસાગરજી વિરચિત—

**તપાગચ્છ પટ્ટાવલી:**—સંપાદક, પં૦ શ્રી કલ્યાણવિજયજી મહારાજ. છપાઇને તૈયાર થઇ પ્રસિદ્ધ થઇ ચુકેલ છે, આ ગ્રંથમાં પ્રભુશ્રી મહાવીરદેવની પાટપરંપરાએ થયેલા આચાર્યાદિ સાથે શાસનપ્રસિદ્ધ અન્ય મહાપુરૂષોનું ઐતિહાસિક દ્રષ્ટીએ ઉપ-યોગી સાહિત્ય આપવામાં આવ્યું છે.

ક્રાઉન આઠ પેજી ૩૫૦ પૃષ્ઠના, શોભિત ફોટાઓ, અને પાકુ પુંઠું (જેકેટ) સાથેના આ ગ્રંથનું મુલ્ય માત્ર રૂા. ૧-૮-૦. પોસ્ટેજ જુદું

લખો—**જૈન ધર્મ વિકાસ ઓફિસ**, ૫૬૧ ગાંધી રોડ, **અમદાવાદ.**